सांध्य दैनिक 4PM

जिद...सच की

www.4pm.co.in | www.facebook.com/4pmnewsnetwork | @Editor_SanjayS | YouTube @4pm NEWS NETWORK

● वर्षः 11 ● अंकः 260 पृष्ठः 8 ● लखनऊ, बुधवार 29 अक्टूबर, 2025

मूल्य ₹ 3/-

बिजनेस का एक आसान सा नियम है, अगर आप उन चीजों को पहले करते हैं जो सरल हैं, तो आप वास्तव में बहुत अधिक प्रगति कर सकते हैं।

-मार्क जुकरबर्ग

वनडे में सर्वश्रेष्ठ रेटिंग के साथ मंधाना... 7 | एसआईआर पूरे देश में करवाने... 3 | बिहार को मथेंगे अखिलेश यादव... 2

सुप्रीम कोर्ट में वांगचुक की रिहाई की खुली राह

अदालत ने दी संशोधन की मंजूरी, सरकार से मांगा ठोस आधार

- एनडीए सरकार की निकलेगी आह?
- लद्दाख की जनता की उभरी चाह
- शीर्ष कोर्ट ने माना वांगचुक की याचिका में दम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। यह खबर सोनम वांगचुक की पत्नी, लेह लद्दाख की जनता और उन तमाम सामाजिक कार्यकर्ताओं के लिए राहत भरी है जो लंबे समय से उनकी रिहाई की मांग कर रहे थे। सुप्रीम कोर्ट ने आज वांगचुक की पत्नी गीतांजलि ज. आंगमो द्वारा दायर याचिका में संशोधन की अनुमति दे दी है। यह फैसला सीधे तौर पर भले किसी आदेश जैसा न लगे लेकिन यह न्याय के दरवाजे खुलने का पहला संकेत माना जा सकता है।

अदालत ने वांगचुक की आवाज को खारिज करने के बजाय उसे और गहराई से सुनने का इशारा दिया है। अगली सुनवाई की तारीख 24 नवंबर तय की गई है। मामला थोड़ा लंबा जरूर खिंच रहा है लेकिन अगर केंद्र सरकार वांगचुक की नजरबंदी का ठोस आधार साबित नहीं कर पायी तो यह तारीख लद्दाख के इतिहास में आजादी की एक नई सुबह बन सकती है।

पहाड़ों की चुप्पी

सोनम वांगचुक फिलहाल हिरासत में हैं लेकिन उनकी आवाज आज देश के हर कोने में गूंज रही है। चाहे वह कश्मीर की घाटी हो या फिर कोल्हापुर की गलियां। यह मामला सिर्फ एक पर्यावरणविद् की रिहाई का नहीं बल्कि यह लोकतंत्र की आत्मा के पुनर्जागरण का संकेत है। क्योंकि अगर पहाड़ों की चुप्पी भी अब राजद्रोह मानी जाएगी तो समझ लीजिए कि हम सब नीचे से फिसल चुके हैं। लेह नागरिक मंच के संयोजक त्सेरिंग दोरजे ने टिवट करते हुए लिखा है कि यह सिर्फ सोनम वांगचुक की नहीं लद्दाख की आत्मा की लड़ाई है। अदालत ने जो रास्ता खोला है वह जनआवाज की जीत है।

क्या बीमार हो चुका है लोकतंत्र?

लद्दाख प्रशासन ने सोनम वांगचुक को राष्ट्रीय सुरक्षा कानून के तहत गिरफ्तार किया है यह कहते हुए कि उनकी गतिविधियां सार्वजनिक व्यवस्था के लिए खतरा हैं। पर सवाल यह है कि क्या जलवायु, संविधान और पर्यावरण की बात करना अब व्यवस्था के लिए खतरा बन गया है? वांगचुक की गिरफ्तारी ने न सिर्फ लद्दाख बल्कि पूरे देश में नागरिक अधिकार बनाम राज्यसत्ता की बहस को फिर से जगा दिया है। विपक्षी दलों का कहना है कि यह कार्रवाई दरअसल लोकतंत्र की असहमति को कुचलने की प्रक्रिया है। टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा ने इस मुददे पर ट्वीट करते हुए सरकार पर हमला किया है उन्होंने लिखा है कि जब कोई शिक्षक अपनी मिट्टी की बात करे और सत्ता उसे देशद्रोही बताए तब लोकतंत्र बीमार हो चुका होता है।

मिलेगी राहत, सरकार के लिए मुश्किल मोड़

अब गेंद केंद्र और लद्दाख प्रशासन के पाले में है। कोर्ट ने उनसे पूछा है कि वांगचुक को क्यों और किन कारणों से एनएसए के तहत गिरफ्तार किया गया है। कानूनी सूत्रों के मुताबिक अगर सरकार का जवाब ठोस नहीं हुआ तो 24 नवंबर को कोर्ट रिहाई का आदेश या कम से कम अस्थायी राहत दे सकता है। लेकिन यही सरकार के लिए सबसे मुश्किल मोड़ होगा। क्योंकि अगर कोर्ट ने गिरफ्तारी को अवैध करार दिया तो यह सीधे तौर पर केंद्र की सुरक्षा नीति पर सवाल होगा। और यह सिर्फ वांगचुक नहीं बल्कि हर एक्टिविस्ट के लिए मिसाल बन जाएगा।

खारिज नहीं, सुधार करो

सुप्रीम कोर्ट ने आज को जो किया वह कानूनी तकनीक से ज्यादा एक संवेदनशील संकेत है। कोर्ट ने कहा कि याचिकाकर्ता वांगचुक की पत्नी अगर चाहें तो याचिका में संशोधन कर सकती हैं यानी कि अब वह नए तथ्य, दस्तावेज या आरोप जोड़ सकती हैं। कोर्ट की तरफ से दी गयी यह इजाजत इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि कोर्ट ने मामले को जिंदा रखा है। सरकार को जवाब दाखिल करने का निर्देश दिया गया है। और सबसे अहम, न्यायिक निगरानी अब शुरू हो गई है। कानूनी विशेषज्ञों के मुताबिक यह फर्स्ट राउंड में विपक्ष की बढ़त जैसा है। वरिष्ठ अधिवक्ता प्रशांत भूषण ने कहा कि कोर्ट का यह आदेश दिखाता है कि मामला सिर्फ एक व्यक्ति का नहीं बल्कि एक संवैधानिक अधिकार का है उन्होंने कहा कि बोलने और विरोध करने का अधिकार।

धनखड़ की चुप्पी पर कांग्रेस ने भाजपा से दागे सवाल

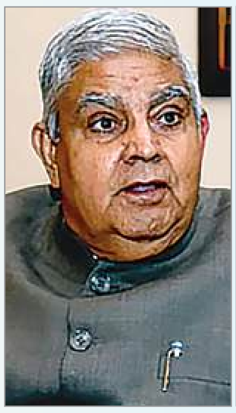

कांग्रेस ने बुधवार को कहा कि पूर्व उप राष्ट्रपति जगदीप धनखड़ को अपने पद से इस्तीफा दिए 100 दिन बीत गए हैं, लेकिन वह अब तक खामोश हैं और उनका विदाई समारोह भी नहीं हुआ है। पार्टी महासचिव जयराम रमेश ने एक बार यह दावा किया था कि धनखड़ को त्यागपत्र देने के लिए मजबूर किया गया था। धनखड़ ने इस साल संसद के मानसून सत्र की शुरुआत में ही स्वास्थ्य कारणों का हवाला देते हुए अपने पद से इस्तीफा दे दिया था। इसके बाद हुए चुनाव में राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन (राजग) के उम्मीदवार सी पी राधाकृष्णन नए उपराष्ट्रपति निर्वाचित हुए। रमेश ने एक्स पर पोस्ट किया, भारतीय राजनीति के इतिहास की एक अभूतपूर्व घटना को घटित हुए ठीक 100 दिन हो गए हैं। 21 जुलाई की देर रात अचानक और आश्चर्यजनक रूप से, भारत के तत्कालीन उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने इस्तीफा दे दिया था। उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूर किया गया था, भले ही उन्होंने दिन-ब-दिन प्रधानमंत्री की प्रशंसा की हो। उन्होंने कहा, रोजाना सुर्खियों में रहने वाले पूर्व उप राष्ट्रपति 100 दिनों से बिल्कुल खामोश हैं। रमेश ने कहा, राज्यसभा के सभापति के रूप में पूर्व उप राष्ट्रपति विपक्ष के अच्छे मित्र नहीं थे। वह लगातार और गलत तरीके से विपक्ष की खिंचाई करते रहते थे। फिर भी, लोकतांत्रिक परंपराओं को ध्यान में रखते हुए, विपक्ष कहता रहा है कि वह कम से कम अपने सभी पूर्ववर्तियों की तरह विदाई समारोह के हकदार हैं। ऐसा नहीं हुआ है। कांग्रेस नेताओं ने, राज्यसभा के सभापति के रूप में विपक्ष के साथ उनके प्रतिकूल संबंधों को उजागर करते हुए, लोकतांत्रिक परंपराओं के अनुरूप उन्हें उचित विदाई देने का आह्वान किया है। पार्टी ने सरकार से धनखड़ के इस्तीफे के पीछे के वास्तविक कारणों पर स्पष्टता प्रदान करने का भी आग्रह किया है।

बिहार को मथेंगे अखिलेश यादव और डिंपल

महागठबंधन के लिए मांगेंगे वोट, 1 नवम्बर से करेंगे चुनाव प्रचार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार विधानसभा चुनाव में एनडीए बनाम इंडिया गठबंधन की चुनावी लड़ाई अब बेहद दिलचस्प होने जा रही है। जहां एक तरफ यूपी के सीएम योगी आदित्यनाथ चुनाव प्रचार में कूद पड़े हैं तो वहीं समाजवादी पार्टी के मुखिया भी बिहार चुनाव प्रचार को धार देने बिहार पहुंच रहे हैं।

सपा अध्यक्ष अखिलेश यादव पहले चरण के चुनाव प्रचार के लिए 1 नवम्बर को बिहार पहुंच रहे हैं। इस दौरान वो बिहार के पूर्णिया, मधुबनी और दरभंगा जिलों में चुनाव प्रचार करेंगे। इस दौरान वो महागठबंधन के प्रत्याशियों के लिए जनसभा करेंगे और उनके समर्थन में वोटरों को साधने की कोशिश करेंगे। सपा अध्यक्ष के साथ उनकी पत्नी और मैनपुरी से सपा सांसद डिंपल यादव भी चुनाव प्रचार के लिए आ सकती है। अखिलेश यादव तीन दिन तक बिहार दौरे पर रह सकते हैं। इसके अलावा वो दो और तीन नवम्बर को भी इन जिलों में अलग-अलग जगहों पर जनसभाएं कर सकते हैं। गठबंधन के समर्थन में उनकी बड़ी-बड़ी जनसभाएं और रोड शो करने का प्लान है।

स्टार प्रचारकों की लिस्ट भी जारी

समाजवादी पार्टी की ओर से बिहार विधानसभा चुनाव में स्टार प्रचारकों की लिस्ट भी जारी कर दी है। इस लिस्ट में अखिलेश यादव, डिंपल यादव के अलावा सपा के वरिष्ठ नेता आजम खान, अफजाल अंसारी, इकरा हसन, प्रिया सरोज, सांसद राजीव राय समेत 20 अन्य बड़े चेहरे शामिल हैं।

बीजेपी नेता का बेहद घटिया और भद्दा बयान : बर्क

मुस्लिम लड़कियों पर विवादित बयान पर भड़के सपा सांसद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बीजेपी के पूर्व विधायक राघवेंद्र प्रताप सिंह द्वारा मुस्लिम लड़कियों को लेकर दिए गए आपत्तिजनक बयान पर समाजवादी पार्टी के सांसद जियाउर्रहमान बर्क ने कड़ी प्रतिक्रि या दी। उन्होंने कहा कि ऐसे व्यक्ति के खिलाफ सख्त कानूनी कार्रवाई की जानी चाहिए और उसे सलाखों के पीछे भेजा जाना चाहिए। सपा सांसद जियाउर्रहमान बर्क ने बीजेपी नेता के बयान को बेहद शर्मनाक और समाज को तोड़ने वाला बताया। उन्होंने कहा कि यह बयान नफरत फैलाने की साजिश है और इससे महिलाओं के सम्मान को ठेस पहुंची है। ऐसे शख्स पर कड़ी कार्रवाई की जानी चाहिए। सपा सांसद ने कहा कि यह बेहद घटिया और भद्दा बयान है ऐसे व्यक्ति के खिलाफ संगीन धाराओं में मुकदमा दर्ज होना चाहिए ताकि वह जिंदगी भर बाहर ना आ सके. बीजेपी एक और नारी सम्मान की बात करती है वही उसके नेता इस तरह के बयान देकर महिलाओं का अपमान कर रहे हैं। ऐसे लोग की जगह समाज में नहीं, सलाखों के पीछे होनी चाहिए। सपा सांसद ने केंद्र सरकार और पुलिस प्रशासन से मांग की है कि इस मामले में तत्काल संज्ञान लेते हुए आरोपी के खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की जाए।

बिहार की जनता को राहुल-तेजस्वी की जोड़ी पर पूरा भरोसा : पवन खेड़ा

बोली कांग्रेस-पूरा होगा महागठबंधन का हर वादा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। बिहार में चुनावी बिगुल बज चुका है मतदान की तारीखों की भी ऐलान हो चुका है। जैसे जैसे मतदान की तारीख पास आ रही है वैसे वैसे राज्य में सियासी गर्मी बढ़ती जा रही है। मैदान में उतरी सभी पार्टियां अलग अलग तरीकों से बिहार के वोटरों को साधने में लगे है। इस बीच महागठबंधन ने अपना चुनावी घोषणा पत्र जारी कर दिया है।

महागठबंधन के घोषणा पत्र पर कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने प्रतिक्रिया दी है। कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने मंगलवार को कहा कि वोटरों को भरोसा है कि कांग्रेस नेता राहुल गांधी और महागठबंधन के मुख्यमंत्री पद के उम्मीदवार तेजस्वी यादव आगामी बिहार विधानसभा चुनावों में अपने चुनावी वादे पूरे करेंगे। उन्होंने कहा कि यह घोषणापत्र बिहार के कल्याण पर केंद्रित है और जनता के प्रति गठबंधन की समर्पण को दर्शाता है।

जो लोग बिखराव देखना चाहते हैं, वे चुनाव हार रहे हैं

सीट बंटवारे को लेकर गठबंधन में दरार की अटकलों को खारिज करते हुए कांग्रेस नेता ने कहा कि जनता को भरोसा है कि राहुल गांधी और तेजस्वी अपने वादे पूरे करेंगे। जो लोग बिखराव देखना चाहते हैं, वे चुनाव हार रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि इंडिया ब्लॉक ने अपना मुख्यमंत्री उम्मीदवार और घोषणापत्र की घोषणा करके बढ़त हासिल की है, जिससे साफ संकेत मिलते हैं हवा का रुख किस ओर है।

कांग्रेस की बढ़ती ताकत दिल्ली तक दिखेगी : अजय राय

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। कांग्रेस के संविधान बचाओ संवाद कार्यक्रम में प्रदेश अध्यक्ष अजय राय ने बताया कि विपरीत परिस्थितियों के बावजूद बारिश में कार्यकर्ता आए हैं, यह कांग्रेस की बढ़ती ताकत का संकेत है। सीतापुर में कांग्रेस की बढ़ती ताकत का यह संदेश बिहार से होकर दिल्ली तक जाएगा।

उन्होंने कहा कि हमारे साथ राष्ट्रीय महासचिव अविनाश पांडेय हैं। यह बिहार चुनाव के प्रभारी भी हैं। बिहार में बदलाव आने वाला है। आज पूरे देश में यह संदेश जा रहा है। हमने वाराणसी में यह संदेश देना शुरू किया था कि सारे उद्योग, सारी फैक्टरियां गुजरात जा रही हैं। बड़े बड़े कारखाने उत्तर प्रदेश को नहीं मिले। जबकि प्रधानमंत्री मोदी यहां से सांसद हैं। इस बार उन्होंने वोटों की चोरी कर चुनाव जीता है। इस बार वह सही मायने में जीत कर लोकसभा नहीं गए। अजय राय ने कहा कि बिहार में प्रधानमंत्री ने कहा कि युवा उनकी वजह से रील बना रहे हैं। मोबाइल पर नौजवान रील देख रहे हैं। वहां उद्योग नहीं जा रहा है। बिहार यूपी के लोगों को रील बनाने की बात कही जा रही है। अब इस बार बिहार ऐसे लोगों को जवाब देने जा रहा है।

भजन सरकार ने पंचायत चुनाव टालने के लिए ही एसआईआर की घोषणा करवाई : डोटासरा

प्रदेश अध्यक्ष बोले- कांग्रेस से जुड़े वोटरों के नाम काटे जाने का षड्यंत्र

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। राजस्थान में एसआईआर की घोषणा के साथ ही विवाद खड़ा हो गया है। प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष गोविंद सिंह डोटासरा ने सनसनीखेज आरोप लगाया है कि राज्य सरकार ने पंचायत चुनाव टालने के लिए ही एसआईआर की घोषणा करवाई है। इसके लिए राज्य सरकार ने केंद्रीय निर्वाचन आयोग को चिट्ठी लिख कर यह बताया कि राजस्थान में पंचायत और निकाय चुनाव पेंडिंग नहीं है इसलिए यहां स्क्रूलागू कर दिया जाए।

उन्होंने कहा कि केंद्रीय निर्वाचन आयोग ने सभी राज्यों से पूछा था कि उनके यहां पंचायत व निकाय चुनाव पेंडिंग तो नहीं है। राजस्थान ने आयोग को जवाब में मना कर दिया। जबकि राजस्थान में 11390 ग्राम पंचायत, 22 जिला परिषद और 305 नगर निकायों में निर्वाचित प्रतिनिधियों का कार्यकाल पूरा होने के बाद सरकार यहां प्रशासक लगा चुकी है। डोटासरा ने कहा कि खुद यूडीएच मंत्री झाबर सिंह खर्रा कई बार बयान चुके हैं कि पंचायत और निकाय चुनावों को लेकर राज्य सरकार तैयार है और इसी साल इनकी घोषणा कर दी जाएगी।

डोटासरा ने कहा कि राजस्थान में विधानसभा चुनाव 3 साल बाद होने हैं इसलिए अभी यहां स्क्रू करवाने की कोई जल्दी नहीं थी। लेकिन सरकार की मंशा साफ है कि वह सिर्फ निकाय और पंचायत चुनाव टालने के मकसद से ही एसआईआर करवा रही डोटासरा ने दावा किया कि प्रदेश में पंचायत और निकाय चुनाव से पहले एसआईआर करवाना एक बड़ी साजिश है। उन्होंने कहा एसआईआर में कांग्रेस से जुड़े वोटरों के नाम काटे जाने का षडयंत्र है, खास तौर पर अल्पसंख्यक और एससी वर्ग के वोट ताकि पंचायत चुनाव में हार से बचा जा सके। पहले वन नेशन वन इलेक्शन, इसके बाद परिसीमन फिर ओबीसी आयोग की रिपोर्ट और अब SIR के नाम पर पंचायत और निकाय चुनाव टालना चाहती है सरकार डोटासरा ने कहा कि राजस्थान में स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन प्रक्रिया लागू करने का निर्णय लोकतांत्रिक अधिकारों पर सीधा प्रहार है। मतदाता सूची में सुधार के नाम पर दलितों, आदिवासियों, पिछड़ों और अल्पसंख्यकों के वोट काटने की साजिश है।

बामुलाहिज़ा
कार्टून: हसन जैदी

गुजरात में बीजेपी को करारा झटका

कई नेता छोड़ आम आदमी पार्टी में शामिल हुए

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

गांधीपुर। गुजरात के छोटा उदयपुर में आम आदमी पार्टी ने अपनी ताकत का शानदार प्रदर्शन किया है। गुजरात जोड़ो जनसभा में हजारों लोगों की भारी भीड़ उमड़ी और भाजपा और कांग्रेस के कई बड़े नेता और कार्यकर्ता आम आदमी पार्टी में शामिल हुए। यह जनसभा न केवल राजनीतिक रूप से ऐतिहासिक साबित हुई,बल्कि इसने यह भी दिखा दिया कि गुजरात में आप की पकड़ गांव-गांव तक मजबूत हो चुकी है।

इस जनसभा में डेडियापाड़ा के विधायक चैतर वसावा, जिला अध्यक्ष राधिका राठवा, विधानसभा प्रभारी विनुभाई राठवा और छात्र नेता युवराज सिंह जाडेजा मंच पर मौजूद रहे। कार्यक्रम के दौरान भाजपा कारोबारी अध्यक्ष राजेश राठवा, कई पूर्व सरपंच, कांग्रेस के पूर्व तालुका पंचायत सदस्य समेत बड़ी तादाद में कार्यकर्ताओं ने आम आदमी पार्टी का दामन थामा यह पार्टी के लिए छोटा उदयपुर में अब तक का सबसे बड़ा शक्ति प्रदर्शन माना जा रहा है। चैतर वसावा ने नए साथियों का स्वागत पारंपरिक खेस पहनाकर किया और कहा कि अब गुजरात में ईमानदार राजनीति की नई कहानी लिखी जाएगी।

उन्होंने घोषणा की है कि आम आदमी पार्टी किसी भी दल से गठबंधन नहीं करेगी और स्थानीय चुनाव अकेले लड़ेगी। उनका कहना था कि अब जनता को पारंपरिक पार्टियों के भ्रष्टाचार और वादाखिलाफी से आजादी चाहिए। आप यही बदलाव लेकर आई है। इस दौरान सभा में चारों ओर गुजरात में भी केजरीवाल, आम आदमी की सरकार और बदलाव का समय आ गया जैसे नारे गूंजते रहे।

गांवों और आदिवासी इलाकों से आए हजारों लोगों की मौजूदगी ने यह साफ कर दिया कि पार्टी का ग्राउंड वर्क अब असर दिखा रहा है। कार्यकर्ता और स्थानीय नेता इसे आम आदमी पार्टी के लिए एक नए राजनीतिक अध्याय की शुरुआत मान रहे हैं। गुजरात में आप की रणनीति जमीनी स्तर पर संगठन मजबूत करने और लोगों को सीधा जोड़ने पर केंद्रित रही है, शिक्षा, स्वास्थ्य और भ्रष्टाचार के मुद्दों पर पार्टी ने लगातार अभियान चलाए हैं, इसी का परिणाम है कि आज बड़ी संख्या में लोग पारंपरिक पार्टियों को छोड़कर आम आदमी पार्टी से जुड़ रहे हैं।

एसआईआर पूरे देश में करवाने को लेकर बवाल

टीएमसी व केरल की सरकार भी विरोध में

» कांग्रेस बोली- मोदी सरकार चुनाव आयोग के साथ मिलकर कर रही वोट चोरी का खेल

» डीएमके ने बुलाई ऑल पार्टी मीटिंग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। कांग्रेस ने चुनाव आयोग के मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण पूरे देश में करवाने को लेकर आयोग के साथ भाजपा व मोदी सरकार को निशाने पर ले लिया है। पार्टी ने कहा है कि आयोग मोदी सरकार के साथ मिलकर मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के तहत 12 राज्यों में वोट चोरी का खेल चलाने का आरोप लगाया। पार्टी ने आरोप लगाया कि बिहार में हुए पुनरीक्षण अभियान, जिसके तहत 69 लाख नाम हटाए जाने का दावा किया गया था, के बाद अब मतदाताओं के साथ छेड़छाड़ का यही खेल पूरे देश में चलाया जा रहा है।

कांग्रेस ने एक्स पर एक तीखी पोस्ट में कहा चुनाव आयोग अब 12 राज्यों में वोट चोरी का खेल खेलने जा रहा है। एसआईआर के तहत बिहार में 69 लाख वोट काटे गए और अब 12 राज्यों में करोड़ों वोट काटे जाएँगे। यह खुलेआम वोट चोरी है, जिसे नरेंद्र मोदी और चुनाव आयोग मिलकर अंजाम दे रहे हैं। यह टिप्पणी मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार द्वारा 12 राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, राजस्थान, गुजरात, तमिलनाडु और केरल सहित – में एसआईआर के अगले चरण के शुभारंभ की घोषणा के तुरंत बाद आई, जबकि उन्होंने कहा कि बिहार चरण शून्य अपील के साथ समाप्त हो गया था।

राज्य के लोगों के मतदान अधिकार छीनने की साजिश : स्टालिन

एसआईआर का सबसे पहले विरोध का झंडा तमिलनाडु ने उठाया. मुख्यमंत्री एम. के. स्टालिन की अगुवाई वाली डीएमके सरकार ने इस प्रक्रिया को राज्य के लोगों के मतदान अधिकार छीनने की साजिश बताया है और इस मुद्दे पर 2 नवंबर को सर्वदलीय बैठक बुलाने का फैसला किया है। डीएमके और उसके सहयोगी दलों ने केंद्र की बीजेपी सरकार पर निशाना साधते हुए कहा कि यह कदम लोकतंत्र को कमजोर और बदनाम करने की कोशिश है। उनका कहना है कि नवंबर–दिसंबर में उत्तर–पूर्व मानसून के दौरान इतने बड़े पैमाने पर यह काम करना बेहद कठिन होगा। पार्टी गठबंधन ने कहा, हम यह नहीं कह रहे कि वोटर लिस्ट का पुनरीक्षण नहीं होना चाहिए, लेकिन इसे इतनी जल्दबाजी में करना गलत है। जब राज्य में अप्रैल में विधानसभा चुनाव होने वाले हैं, तब यह कदम उचित नहीं है। डीएमके ने आरोप लगाया कि बिहार में एसआईआर के दौरान मुसलमानों, दलितों और महिलाओं को निशाना बनाया गया था। बयान में कहा गया, तमिलनाडु ऐसी किसी साजिश को सफल नहीं होने देगा। हम मिलकर इसका विरोध करेंगे।

आयोग का फैसला एकतरफा और जल्दबाजी भरा :. बेबी

सीपीआई (एम) के वरिष्ठ नेता एम. ए. बेबी ने कहा कि आयोग का फैसला एकतरफा और जल्दबाजी भरा है। उन्होंने आरोप लगाया, जब सुप्रीम कोर्ट बिहार में एसआईआर की वैधता पर सुनवाई कर रहा है, तब इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाना लोकतांत्रिक मानकों का अपमान है।

बिहार में कितनी बांग्लादेशी आईडेंटिफाई किए बताए आयोग : भूपेश बघेल

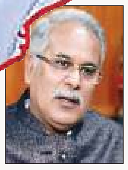

भूपेश बघेल ने एसआईआर को लेकर कहा कि दूसरे फेज के लिए घोषणा हो चुकी है। 12 राज्यों में एसआईआर होगा। छत्तीसगढ़ में भी होगा एसआईआर। निर्वाचन आयोग को बताना चाहिए कि बिहार में कितनी बांग्लादेशी आईडेंटिफाई किए गए। एसआईआर से ये लोग विदेशी नागरिक भागने की बात कर रहे हैं। छत्तीसगढ़ में बहुत सारे विदेश नागरिक हैं क्या गृह मंत्रालय ने अभी तक इसकी जानकारी नहीं दी। ऑपरेशन सिंदूर के बाद अमित शाह ने आदेश दिया था कि तीन दिन के अंदर पाकिस्तानियों को बाहर किया जाए लेकिन छत्तीसगढ़ की निकम्मी सरकार ने अभी तक पाकिस्तानियों को आईडेंटिफाई नहीं किया।

बिहार में हुआ एसआईआर तो बस ट्रायल था असली निशाना बंगाल : डेरेक ओ'ब्रायन

पश्चिम बंगाल की सत्ताधारी टीएमसी और केरल की सीपीआई(एम) सरकार ने भी चुनाव आयोग पर तीखे प्रहार किए। टीएमसी सांसद डेरेक ओ'ब्रायन ने कहा, बिहार में हुआ एसआईआर तो बस ट्रायल था, असली निशाना बंगाल है। जनता कुछ महीनों में आयोग को जवाब देगी, जो अब पूरी तरह पक्षपाती हो चुका है।

मामला सुप्रीम कोर्ट में विचाराधीन इतनी जल्दी में क्यों है आयोग : प्रमोद तिवारी

कांग्रेस के राज्यसभा सांसद प्रमोद तिवारी ने कहा कि पार्टी को चुनाव आयोग के इस कदम पर तीन मुख्य आपत्तियां हैं। उन्होंने मतदाता सूची संशोधन प्रक्रिया के कुछ पहलुओं को चुनौती देने वाली याचिकाओं का हवाला देते हुए

पूछा, जब मामला सुप्रीम कोर्ट में विचाराधीन है, तो चुनाव आयोग देशव्यापी एसआईआर लागू करने के लिए इतना उत्सुक क्यों है? उन्होंने कथित अवैध प्रवासियों के मुद्दे पर पारदर्शिता के अभाव पर भी सवाल उठाया। तिवारी ने कहा कि चुनाव आयोग ने अवैध प्रवासियों के बारे में कोई जानकारी क्यों नहीं साझा की, जबकि बिहार में भाजपा ने इस विषय का राजनीतिक इस्तेमाल किया था? चुनिंदा क्रियान्वयन का आरोप लगाते हुए उन्होंने कहा कि असम के लिए एसआईआर क्यों नहीं? यह सत्तारूढ़ सरकार पर एक तमाचा है और मोदी-शाह की पूरी तरह से विफलता है, क्योंकि उनके बार-बार दावों के बावजूद किसी भी अवैध प्रवासी का पता नहीं चला है।

डिजिटल सत्यापन और आधार कार्ड शामिल करे आयोग: दिग्विजय

मध्यप्रदेश में प्रत्येक मतदाता की पहचान की दोबारा जांच होगी। भारत निर्वाचन आयोग ने सोमवार को विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) अभियान की शुरुआत की घोषणा की। इस प्रक्रिया के तहत प्रदेश की सभी 230 विधानसभा सीटों के मतदान केंद्रों की वोटर लिस्ट को नए सिरे से परखा जाएगा। इधर एसआईआर के दूसरे चरण पर कांग्रेस सांसद दिग्विजय सिंह ने कहा कि एसआईआर के संबंध में हमारी मांग स्पष्ट है। पहली, हमें जो मतदाता सूची दी जा रही है, उसमें मशीन द्वारा पढ़ी जा सकने वाली सूची होनी चाहिए ताकि हम डिजिटल रूप से सत्यापित कर सकें कि किसी व्यक्ति का नाम दो या तीन जगहों पर है या नहीं। दूसरी, उन्होंने (चुनाव आयोग ने) जो प्रमाण पत्र मांगे हैं, उनमें आधार कार्ड को शामिल नहीं किया गया है... हम इसका विरोध करते हैं... यह प्रत्येक नागरिक का मौलिक अधिकार है कि उसका नाम मतदाता सूची में जोड़ा जाए। इसकी जिम्मेदारी और कर्तव्य चुनाव आयोग का है। यह निर्वाचन आयोग की विशेष प्रक्रिया है। इसमें 18 वर्ष से अधिक आयु के नए मतदाताओं का पंजीकरण किया जाएगा। साथ ही मृत,

स्थानांतरित, या डुप्लिकेट नामों को हटाया जाएगा। साथ ही गलत पते या नाम की त्रुटियों का सुधार किया जाएगा। इसके लिए बीएलओ द्वारा घर–घर जाकर फॉर्म भरवाना और पहचान सत्यापन।मध्य प्रदेश में कुल मतदाता करीब 5.74 करोड़ हैं। प्रदेश में 65,014 पोलिंग बूथ, 1 लाख 19 हजार 940 बीएलओ, 762 सहायक रिटर्निंग ऑफिसर और 55 जिला निर्वाचन अधिकारी हैं। वहीं, जानकारी के अनुसार प्रदेश में 2.92 करोड़ पुरुष मतदाता और 2.78 करोड़ के करीब महिला मदताओं क संख्या हैं। प्रदेश में आयुवार मतदाताओं की संख्या में 18–19 वर्ष के 11 लाख 19 हजार 161, 20 से 29 वर्ष के 1 करोड़ 33 लाख 88 हजार 424, 30 से 39 वर्ष के 1 करो? 51 लाख 44 हजार 883, 40 से 49 वर्ष के 1 करोड़ 15 लाख 28 हजार 407, 50 से 59 वर्ष के 81 लाख 31 हजार 709, 60 से 69 वर्ष के 48 लाख 15 हजार 858 और 70 से 79 वर्ष के 22 लाख 11 हजार 505 मतदाता हैं। इसी तरह 80 वर्ष से अधिक उम्र के प्रदेश में कुल 7 लाख 52 हजार 420 मतदाता हैं।

एसआईआर की खामियों को सुप्रीम कोर्ट तक को दखल देकर सुधारना पड़ा : पवन खेड़ा

कांग्रेस ने भी चुनाव आयोग की मंशा पर सवाल उठाए, पार्टी प्रवक्ता पवन खेड़ा ने कहा, बिहार में एसआईआर की खामियों को सुप्रीम कोर्ट तक को दखल देकर सुधारना पड़ा। अब वही प्रयोग दूसरे राज्यों में दोहराया जा रहा है। यह स्पष्ट है कि चुनाव आयोग अब बीजेपी के नियंत्रण में काम कर रहा है।

जिद... सच की

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

सिस्टम ठीक करने से निकलेगा समाधान

> पांच दिवसीय दीपोत्सव सभी ने धूमधाम से मनाया। त्योहार के लिए सभी ने साफ-सफाई की... रोशनी की..। घर-गली-मोहल्ला-शहर-प्रदेश सभी चकाचक और जगमग रहे। त्योहार के अगले दिन एक बदरंग तस्वीर नजर आई। चकाचक-साफ-सुथरे की बजाय जगह-जगह कचरे के ढेर लगे थे। नालियां भी जाम थी। राज्यों की राजधानियों की ही बात करें, तो यहां की सफाई व्यवस्था पूरी तरह ठप रही।

दीपोत्सव व अन्य त्योहारों के बाद देश के कई शहरों में जगह-जगह कचरे का ढेर, दगे पटाखों ये पटी सड़कें भारतीय नागरिकों की गैरजिम्मेदाराना रवैये को दर्शाती हैं। सबसे दुखद पहलू मुर्तियों के इधर-उधर फेंके जाने का है। हालांकि नगरनिगमों का दावा होता है कि उनके लिए उन्होंने सुविधा बना रखी है पर जगह-जगह गणेश लक्ष्मी की मुर्तियों का इस तरह से कूड़े के ढेरों पर फेंका जाना लोगों की आसथा को भी ठेस पहुंचाता है। हवा भी दूषित हो जाती है। पांच दिवसीय दीपोत्सव सभी ने धूमधाम से मनाया। त्योहार के लिए सभी ने साफ-सफाई की... रोशनी की..। घर-गली-मोहल्ला-शहर-प्रदेश सभी चकाचक और जगमग रहे। त्योहार के अगले दिन एक बदरंग तस्वीर नजर आई। चकाचक-साफ-सुथरे की बजाय जगह-जगह कचरे के ढेर लगे थे। नालियां भी जाम थी। राज्यों की राजधानियों की ही बात करें, तो यहां की सफाई व्यवस्था पूरी तरह ठप रही।

हालांकि नगर निगमों ने दावे किया कि के प्रमुख मार्गों की सफाई के लिए मैकेनाइज्ड स्वीपिंग मशीनें लगाई गई थीं और रात में विशेष सफाई कराने का काम किया गया। लेकिन, सड़कों पर पटाखों का कचरा, अन्य सामग्री-रैपर आदि के ढेर अभी भी देखे जा सकते हैं। वहीं डोर-टू-डोर कचरा कलेक्शन करने वाली कंपनी की गाड़ियों के पहिए भी थमे रहे। नगर निगम प्रशासन ने साफ-सफाई और स्ट्रीट लाइटों के लिए जोन के अधिकारियों के मोबाइल नंबर सार्वजनिक किए थे, वो भी काम नहीं आए। क्योंकि सफाई ठेकेदार और कामगार दोनों छुट्टी पर चले गए थे। वहीं, रायपुर सहित प्रदेश के प्रमुख शहरों की हवा भी खराब हुई। त्योहार पर जमकर आतिशबाजी हुई। इससे हवा में प्रदूषण का स्तर निर्धारित मानक से दोगुना जा पहुंचा। पटाखों को लेकर कोर्ट की गाइडलाइन है। कैसे पटाखे चलाने हैं, कितने बजे तक चलाने हैं, आदि आदि। तो कहीं बैन भी कर दिया जाता है। अब सवाल यह उठता है कि क्या त्योहारों पर खुशियों पर बैन लगाया जा सकता है? साफ-सफाई व्यवस्था चरमराने के लिए सिर्फ आम लोगों को ही जिम्मेदार ठहराया जा सकता है? यह तो सर्वविदित है कि हर साल त्योहार आएंगे और इन्हें लगभग इसी तरह से उत्साह-उमंग के साथ मनाया भी जाएगा। तो फिर प्रदूषण और अन्य अव्यवस्था-समस्या का समाधान कैसे होगा। इसके लिए लोगों और समाज को तो जागरूक होना ही होगा और लोग धीरे-धीरे जागरूक हो भी रहे हैं। वे स्वमेय ही साफ-सफाई और प्रदूषण नियंत्रण पर ध्यान दे रहे हैं। लेकिन शासन-प्रशासन को भी समझना चाहिए कि सिर्फ नियम-कानून लागू कर देने से ही समस्या का समाधान नहीं हो जाता। शासन-प्रशासन साफ-सफाई सहित अन्य व्यवस्था चुस्त-दुरुस्त रखे।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

किस करवट बैठेगा प्रवासी मतदाताओं का ऊंट

उमेश चतुर्वेदी

सूर्य पूजा के लोक पर्व छठ के दौरान, जब बिहार के प्रवासी अपने घर लौट रहे हैं, तब राज्य की धरती इन दिनों गुंजायमान है। चुनावी माहौल में प्रवासियों के लौटने से राजनीतिक दलों की धड़कनें तेज हो गई हैं। जाति और धर्म के खांचों में बंटे बिहारी समाज में अब एक नया खांचा उभरकर सामने आ रहा है- वह खांचा है प्रवासियों का। प्रवासी की अपनी जाति, धर्म और सामाजिक पहचान होती है, लेकिन बाहरी दुनिया में रहने वाले इन लोगों की सोच और दृष्टिकोण उनके घर-परिवार और पारंपरिक समाज से कुछ अलग हो सकती है। इसी कारण माना जा रहा है कि इस बार प्रवासियों का वोटिंग पैटर्न पारंपरिक सामाजिक और पारिवारिक सोच से इतर हो सकता है। यदि ऐसा होता है, तो इस बार बिहार की नई सरकार की किस्मत में प्रवासी वोटरों की भूमिका महत्वपूर्ण और निर्णायक होगी।

पिछले साल रेलवे के अनुसार, छठ पर्व के दौरान पूर्वी उत्तर प्रदेश, बिहार और झारखंड से 6.5 करोड़ लोग रेल यात्रा पर थे, जिनमें अधिकांश बिहार के लोग थे। अब बिहार जाने के लिए रेल ही नहीं, सड़क, बस और निजी वाहनों से यात्रा करने वालों की भी अच्छी-खासी संख्या है। इस साल बारह हजार विशेष रेल गाड़ियां चलाई गई हैं। निष्कर्ष है कि इस बार छठ पर्व के दौरान रेल यात्रा करने वालों की संख्या पिछले साल से पौने दो गुना अधिक हो सकती है। सवाल यह है कि क्या ये लोग केवल पर्व मनाने ही घर लौट रहे हैं, या उनका उद्देश्य बिहार विधानसभा चुनावों में अपने मताधिकार का इस्तेमाल करना भी है? जबकि छठ पर्व के तुरंत बाद केवल वे प्रवासी काम पर लौटते हैं, जिनका रोजगार संगठित क्षेत्र में होता है, अधिकांश लोग असंगठित क्षेत्र से हैं और वे परिवार के खेतों में मदद के लिए रुक जाते हैं। ये लोग धान की कटाई और रबी की बुवाई के बाद ही काम पर लौटते हैं। इनमें से अधिकांश वोटर भी हैं, यानी इस बार ये प्रवासी मतदाता बिहार विधानसभा चुनाव में भी अपनी भूमिका निभाएंगे। बिहार के प्रवासी मतदाताओं की इस ताकत को सभी राजनीतिक दल जानते हैं।

इसमें दो राय नहीं कि भाजपा की चुनावी मशीनरी हर चुनाव को रण की तरह लेती है। दिल्ली, मुंबई, सूरत, लुधियाना जैसे शहरों में बिहार चुनाव को देखते हुए प्रवासियों के साथ अरसे से संवाद कर रही है। बीजेपी शासित राज्यों में छठ घाटों के निर्माण, छठ पर्व

में सरकारी भागीदारी और सहयोग भी इसी रणनीति का एक हिस्सा है। सत्ता का दावेदार माना जा रहा राष्ट्रीय जनता दल भी सक्रिय रहा है। हालांकि उसकी कोशिशें बीजेपी जितनी नहीं रही हैं। हाल के दिनों में उसने भी विशेषकर पिछड़े वर्ग के पढ़े-लिखे कुछ युवाओं को जोड़कर उनके जरिए प्रवासियों को साधने की कोशिश की है। प्रवासियों को सत्ताधारी जनता दल यू भी साधने की कोशिश करता रहा है। देश की सबसे पुरानी पार्टी कांग्रेस के कुछ नेताओं ने ऐसे प्रयास जरूर किए हैं। बिहार की राजनीति में प्रशांत किशोर भी सक्रिय हैं। उनकी ओर से सीधा और प्रत्यक्ष संवाद कम, लेकिन सोशल मीडिया और मीडिया पर उनकी लगातार उपस्थिति ने प्रवासियों को प्रभावित जरूर किया है। विशेषकर पढ़े-लिखे प्रवासियों और बाहर निकले बिहारी छात्रों में उनकी अपील ज्यादा है। इस लिहाज से देखें तो प्रवासी बिहारी मतदाताओं को लेकर सबसे ज्यादा जंग बीजेपी और प्रशांत किशोर की जनसुराज पार्टी में ही होने की संभावना है। प्रवासी वोटरों का बड़ा हिस्सा प्रशांत किशोर को राजनीतिक रूप से खड़ा करने में मददगार हो सकता है। ध्यान देने की बात यह है कि साल 2020 के विधानसभा चुनावों में करीब बीस प्रतिशत सीटों पर जीत और हार का अंतर महज ढाई फीसद तक ही था। इन आंकड़ों के संदर्भ में प्रवासियों के मत को देखा-परखा जाना चाहिए। इसके साथ ही गांव, मोहल्ले और कस्बे के प्रवासियों में एक बात रेखांकित की जा सकती है। बाहर रहने, वहां के समाज को देखने और पढ़ाई-लिखाई के चलते वे कई मुद्दों पर अपने घर, परिवार, मोहल्ले और जातीय समुदाय से अलग ढंग की सोच रखते हैं।

कई बार एक इलाके के प्रवासी अपनी सामाजिक और पारिवारिक पृष्ठभूमि के बावजूद अन्य प्रवासियों जैसा विचार रखते हैं। इस लिहाज से अपने ही गांव-समाज में अलग तरह के दबाव समूह के रूप में भी काम कर रहे होते हैं। बिहार के मौजूदा चुनाव अभियान में इस सोच का भी असर पड़ना तय है। शायद यही वजह है कि छठ घाटों पर राजनीतिक दलों, उनके कार्यकर्ताओं और उनके स्थानीय पदाधिकारियों का जमावड़ा है। छठ के बहाने वे प्रवासियों के साथ ही स्थानीय मतदाताओं से भी संपर्क साधेंगे और उनके जरिए अपने दल और नेता को समर्थन दिलाने की कोशिश करेंगे।

संयम आधारित हो नये दौर की शासन कला

लेफ्टिनेंट जनरल एसएस मेहता सेवानिवृत्त

युद्ध कभी-कभार ही वहां खत्म होते हैं जहां वे थमते हैं; जहां वे विराम लेते हैं वहां से अनुपात का आगाज होता है। वर्साय से लेकर गाजा तक, बगदाद से कीव तक, हर अधूरा युद्ध वही सबक दोहराता है, बिना संयम की जीत अपने ही विनाश के बीज बोती है। जब जीत अपमान में बदल जाए, तब शांति भरभरा कर गिर जाती है। भारत लंबे समय से इस सच्चाई को जानता है। ढाका से लेकर कारगिल व ऑपरेशन सिंदूर तक, भारतीय गणतंत्र की जीत सभ्यतागत रही है, युद्धविराम थकान से नहीं अपितु दूरदर्शिता से रोक लेने की क्षमता। संयम का अर्थ पीछे हटना नहीं; यह एक फैसला होता है, विवेक के साथ साहस का, अनुपात संग शक्ति का। अंत भला हो, यह कमान का सबसे मुश्किल काम है।

अपरिमेय जीत का जाल : जैसे कि दुनिया के महाद्वीपों और समुदायों में खून बह रहा है, संयम की बात कहीं नहीं हो रही। युद्ध बेवजह जारी रहते हैं, और शांति का कोई नामलेवा नहीं। इस नैतिक शून्य में, भारत की आनुपातिक संतुलन की विरासत एक गुण से कहीं ज्यादा है, यह अतिरेक के युग के लिए प्रति-आख्यान बन जाती है। अपरिमेय जीत सत्ता का सबसे पुराना जाल है। वर्साय ने हिटलर को जन्म दिया; इराक के जातीय बंटवारे ने आईएसआईएस पैदा की। बिना सोचे-समझे बदला लेने की प्रवृत्ति सिर्फ वर्दी बदलती है, दुश्मनी नहीं। पूर्ण विजय की तलाश अक्सर अगली पीढ़ी की पूर्ण हार तय करती है। भारत का अनुशासन सिद्धांतों पर युद्ध खत्म करने में है, न कि तालियों की खातिर। विघटन पैदा करने वालों को चुनौती : वर्तमान विश्व व्यवस्था के रचनाकार, जो गठबंधन को आज्ञाकारिता के बराबर मानते हैं, जिस विघटन को वे अब कोस रहे हैं वह खुद उन्होंने पैदा किया। जो लोग स्वायत्तता की आलोचना अलग-थलग पड़ जाने या तटस्थता रखने के रूप में करते हैं, उनके लिए जवाब सरल है, गुटों की वफादारी विफल रही।

भारत का अनुशासन महज घरेलू गुण नहीं; यह शक्ति के विफल मॉडल को चुनौती देता है, एक दबाव रहित आमूल-चूल बदलाव पेश करता है, जिसमें स्वायत्तता व संयम रणनीतिक पसंद के उच्चतम रूप बन जाते हैं। आधुनिक शक्ति का व्याकरण : संयम सिर्फ विरासत बनकर नहीं रह सकता। आज शक्ति प्रयोग न केवल हथियारों से बल्कि एल्गोरिदम, वित्त और इन्फलुएंस के जरिये किया जाता है। राज्य-व्यवस्था का व्याकरण बदल गया है। सप्लाई चेन घेराबंदी की रस्सियां हैं, डेटा नया रणक्षेत्र है, और सबसे आगे है कहानी गढ़कर फैलाने की होड़। आगामी युद्ध घोषित रूप में न होकर सहेज कर पाली खुन्नस है, जो धारणा, सटीकता और धैर्य के जरिये लड़े जाएंगे। जो देश अंत बढ़िया कर सकेगा वही लंबा टिक पाएगा। भारत के लिए चुनौती दोहरी है : सदी की रफ्तार से कदम मिलाकर अपना सभ्यतागत स्वभाव कायम रखना। सिद्धांत को तैयारी संग, नैतिकता को फुर्ती के साथ, और धैर्य को सटीकता से जोड़ना होगा। संयम की कला तकनीक, कूटनीति और संचार के साथ पिरोनी होगी। रणनीतिक स्वायत्तता का मरहम - जब पी-5 वीटो से पंगु हो जाता है, संयुक्त राष्ट्र निष्प्रभावी हो जाता है और लहु-लुहान दुनिया में खून बहना जारी रहता है।

व्यापार एक हथियार बन गया और शांति पुरस्कार की चाहत रखने से पहले काबिलियत का ढिंढोरा पीटने वाले प्रायोजक ढूंढ़े जा रहे हैं; तब फिर किससे उम्मीद की जाये? कोई नहीं। ऐसे ही हालात में भारत की सभ्यतागत नैतिकता की जरूरत है, हुक्म चलाने के लिए नहीं, बल्कि मिसाल पेश करने को। यह दिखाने के लिए कि ताकत को परिभाषित करने के लिए दूसरे पर हावी होने की जरूरत नहीं; वह संयमित राष्ट्र जो सीना तान चले, अभी भी तूफान को थाम सकता है। विभाजित दुनिया में यह रणनीतिक स्वायत्तता है, सिद्धांत परक तीसरी राह, जो गुटीय राजनीति से दूर रहे, ऐसा मरहम जो तारीफ चाहे बिना घाव भर दे। संयम की पुनर्कल्पना : नतीजों पर महारत पाने के बाद संयम को अब संदर्भ में सिद्धहस्तता हासिल करनी होगी। यह वहां से शुरू होता है जहां शक्ति प्रयोग खत्म होता है और जिम्मेदारी शुरू होती है। यह दूरदर्शिता के जरिए व्यक्त अनुपात और दृढ़ विश्वास से दर्शाया आत्मसंयम है। शासन उद्वेग, शक्ति और प्रयोजनवश झूठ से परे होता है, उकसाने पर भी सटीकता से काम करने का अनुशासन, बिना किसी की नकल किए व्यवस्था बनाए रखना, अलग-थलग पड़े बगैर पहचान कायम रखना।

सशस्त्र बलों ने लंबे समय से इस अनुशासन का पालन किया, ढाका में युद्धविराम से लेकर सिंदूर सिद्धांत तक, शांत रहकर तैयारी, बिना प्रचार की सटीकता, और अत्याचार से रहित शक्ति। टकराव पर वार्ता को प्राथमिकता देकर भारतीय कूटनीति ने भी इसे अपनाया। अगला सीमाक्षेत्र आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का है, जहां तकनीक पारदर्शिता की सेवार्थ हो न कि अत्याचार के हितार्थ। जो गणराज्य अपने एल्गोरिदम को मानवीय बना सकता है, वह न केवल शक्ति बल्कि विश्वास भी अर्जित करेगा। डिजिटल क्षेत्र में गति को सच्चाई के साथ संतुलित करने की भारत की सहज वृत्ति, उसकी सबसे बड़ी रणनीतिक देन हो सकती है। शांति की परीक्षा, ऐसे संतुलन के लिए निगरानी चाहिये। दुनिया बिखरी पड़ी है, क्षेत्रों में उथल-पुथल है; पुरानी निष्ठाएं बदल रही हैं, और चीन का चुपके से प्रवेश शांति के मुखोटे के पीछे छिपा है। गढ़ी गई ऐसी शांति में, कूटनीति तले धोखेबाजी चलती है। यहीं पर संयम को सिर्फ इंतजर न करके विचार करना होगा, जहां आत्म संयम स्पष्टता से मेल खाता है।

घर पर झटपट तैयार हो जायेंगे ये पकवान

आज के समय में नौकरी और पढ़ाई के लिए ज्यादातर लोग अपने घर से बहुत दूर रहते हैं। ऐसे समय में सबसे ज्यादा परेशानी उन लोगों के सामने आती है, जिन्हें खाना बनाना नहीं आता, क्योंकि कई बार घर में खाना बनाने वाली कुक नहीं आती है। ऐसे में या तो किसी रेस्टोरेंट से खाना मंगवाना पढ़ता है, या फिर घर पर इंस्टेंट नूडल्स से पेट भरना पड़ता है। यदि आप भी इन दिक्कतों का सामना कर रहे हैं तो अब घबराने की जरूरत नहीं है। जिन्हें बनाना काफी आसान है। इन पकवानों को वो लोग भी तैयार कर सकते हैं, जिन्हें रसोई में कुछ बनाना नहीं आता।

वेज पुलाव

सामान बासमती चावल- 1 कप, मिक्स सब्जियां, प्याज- 1, हल्दी, नमक, गरम मसाला, तेल या घी, हरा धनिया।

विधि

वेज पुलाव खाने में काफी स्वादिष्ट लगता है। इसे बनाने के लिए सबसे पहले तो चावलों को आधे घंटे पहले पानी में भिगो दें। आधे घंटे तक भीगने के बाद चावल फूल जाएंगे। अब कुकर में सबसे पहले तेल डालकर गरम करें और फिर उसमें बारीक कटा प्याज डालकर भूनें। जब प्याज सही से भुन जाए तो इसमें सब्जियां डालें और फिर मसाले डालें। सबसे आखिर में चावल और नमक डालकर मिक्स करें। यदि एक कप चावल लिया है तो उसमें दो कप पानी डालें और कुकर की सीटी लगा दें। 2 सीटी आने के बाद गैस बंद कर दें और भाप निकलने दें। जब भाप अपने आप निकल जाए तो कुकर का ढक्कन खोलें और फिर हरा धनिया डालकर सर्व करें।

वेज सैंडविच

सामान ब्रेड स्लाइस- 4, खीरा- 1 (पतला कटा हुआ), टमाटर- 1 (पतला कटा हुआ), शिमला मर्च, कॉर्न, नमक- स्वाद अनुसार, काली मिर्च- थोड़ा सा, चाट मसाला- 1/4 चम्मच, हरी चटनी- 2 चम्मच, मेयोनीज, मक्खन।

विधि वेज सैंडविच बनाने के लिए सबसे पहले कॉर्न को उबालकर एक कटोरे में निकालें और फिर उसमें खीरा, टमाटर और शिमला मिर्च बारीक काटकर डालें। इसके साथ इसमें सभी मसाले और मेयोनीज भी मिक्स करें। आखिर में एक ब्रेड स्लाइस लें, उस पर चटनी लगाएं। अब इसके ऊपर तैयार स्टफिंग रखें। स्टफिंग तो दूसरी ब्रेड स्लाइस से ढक दें। चाहें तो इसे सेक लें, वरना आप इसे ऐसे भी खा सकते हैं।

बेसन का चीला

विधि

बेसन का चीला बनाने के लिए सबसे पहले तो एक बड़े कटोरे में सभी सामानों को मिक्स करके पतला घोल बना लें। घोल बनाते समय ध्यान रखें कि ये न तो ज्यादा पतला होना चाहिए और न ही ज्यादा गाढ़ा। इसे तैयार करने के बाद तवे को गैस पर रखें और उस पर हल्का तेल लगाएं। तवे पर तेल लगाने के बाद उसपर घोल से चीला बनाएं। जब ये एक साइड से सुनहरा सिक जाए तो पलटकर दूसरी साइड से भी इसे सेक लें। सुनहरा सिका हुआ चीला खाने में और भी स्वादिष्ट लगता है। इसे आप चटनी के साथ परोस सकते हैं।

सामान बेसन- 1 कप, प्याज, टमाटर, हरी मिर्च, नमक, हल्दी, हरा धनिया, पानी- पेस्ट बनाने के लिए।

हंसना मना है

टीटू- स्टेशन जाने का कितना लोगे? रिक्शा वाला- 50, टीटू- 20 ले लो... रिक्शा वाला- 20 में कौन ले जाएगा? टीटू- तुम पीछे बैठो हम ले जाएंगे।

पति- पत्नी का झगड़ा हो रहा था तो पति बोलता है-पति- तुम ब्यूटी पार्लर में 5000 का कबाड़ा करके आती हो उसका क्या? पत्नी- वो तो मैं तुम्हें सुंदर दिखूं इसलिए। पति- पगली तो मैं भी तो इसलिए पीता हूं कि तू मुझे सुंदर लगे।

पत्नी- आपने कुछ सुना... पति- क्या... पत्नी- जिन पंडित जी ने अपनी शादी करवाई थी आज वो मर गए, पति- कभी न कभी तो उसे अपने कर्मों का फल मिलना ही था...

गोलू- भाई मुझे हाथ देखना आता है... भोलू- अच्छा मेरा देख जरा... गोलू- तुम्हारी हस्तरेखा बताती है कि तुम्हारे घर के नीचे बहुत धन है, भोलू- ठीक कहा आपने, मेरे घर के नीचे बैंक की ब्रांच है!

कहानी: ऊंट और गीदड़

एक जंगल में दो पक्के दोस्त गीदड़ और ऊंट रहते थे। गीदड़ काफ़ी चालाक था और ऊंट सीधा-सा। दोनों दोस्त घंटों नदी के पास बैठकर अपना सुख-दुख बांटते थे। एक दिन किसी ने गीदड़ को बताया कि पास के खेत में पके हुए तरबूज हैं। यह सुनते ही गीदड़ का मन ललचा गया। अब नदी को पार करके खेत तक पहुंचना उसके लिए मुश्किल था। सोचते-सोचते वो ऊंट के पास चला गया। ऊंट ने पूछा, मित्र, तुम यहां कैसे? तब गीदड़ ने बड़ी ही चालाकी से कहा, देखो मित्र, पास के ही खेत में पके तरबूज हैं। तुम उन्हें खाकर खुश हो जाओगे। इसलिए, तुम्हें बताने चला आया। ऊंट को तरबूज काफी पसंद था। वो बोला, वाह! मैं अभी उस गांव में जाता हूं। ऊंट जल्दी-जल्दी नदी पार करके खेत जाने की तैयारी करने लगा। तभी गीदड़ ने कहा, दोस्त, तरबूज मुझे भी अच्छे लगते हैं, लेकिन मुझे तैरना नहीं आता है। तभी ऊंट बोला, तुम चिंता मत करो, मैं तुम्हें अपनी पीठ पर बैठाकर नदी पार करवाऊंगा। फिर साथ में मिलकर तरबूज खाएंगे। ऊंट ने जैसा कहा था वैसा ही किया। खेत में पहुंच कर गीदड़ ने मन भरकर तरबूज खाए और खुश हो गया। खुशी के मारे वो जोर-जोर से आवाजें निकालने लगा। तभी ऊंट ने कहा, तुम शोर मत मचाओ, लेकिन वो माना नहीं। गीदड़ की आवाज सुनकर किसान डंडे लेकर खेत के पास आ गए। गीदड़ चालाक था, इसलिए जल्दी से पेड़ों के पीछे छुप गया। ऊंट का शरीर बड़ा था, इसलिए वो छुप नहीं पाया। किसानों ने गुस्से के मारे उसे बहुत मारा। किसी तरह अपनी जान बचाते हुए ऊंट खेत के बाहर निकला। तभी पेड़ के पीछे छुपा गीदड़ बाहर आ गया। गीदड़ को देखकर ऊंट ने गुस्से में पूछा, तुम क्यों इस तरह चिल्ला रहे थे? गीदड़ ने कहा कि मुझे खाने के बाद चिल्लाने की आदत है, तभी मेरा खाना पचता है। इस जवाब को सुनकर ऊंट को और गुस्सा आ गया। फिर भी वो चुपचाप नदी की ओर बढ़ने लगा। नदी के पास पहुंचकर उसने अपनी पीठ पर गीदड़ को बैठा लिया। इधर ऊंट को मार पड़ने से मन-ही-मन गीदड़ खुश हो रहा था। उधर नदी के बीच में पहुंचकर ऊंट ने नदी में डुबकी लगानी शुरू कर दी। गीदड़ डर गया और बोलने लगा, यह क्या कर रहे हो? गुस्से में ऊंट ने कहा, मुझे कुछ खाने के बाद उसे हजम करने के लिए नदी में डुबकी मारनी पड़ती है। गीदड़ को समझ आ गया कि ऊंट उसके किए का बदला ले रहा है। बहुत मुश्किल से गीदड़ पानी से अपनी जान बचाकर नदी किनारे पहुंचा। उस दिन के बाद से गीदड़ ने कभी भी ऊंट को परेशान करने की हिम्मत नहीं की।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष बुद्धि का प्रयोग करें। प्रयास अधिक करना पड़ेंगे। निराशा हावी रहेगी। आय में निश्चितता रहेगी। व्यापार ठीक चलेगा। लाभ होगा। स्वास्थ्य कमजोर रहेगा।

वृषभ कारोबार में वृद्धि के योग हैं। सभी ओर से सफलता प्राप्त होगी। दुष्टजन हानि पहुंचा सकते हैं। लाभ होगा। आशंका-कुशंका के चलते कार्य की गति धीमी रह सकती है।

मिथुन पारिवारिक सहयोग से कार्य में आसानी होगी। दूसरों के कार्य में दखल न दें। जीवनसाथी से कहासुनी हो सकती है। संपत्ति के बड़े सौदे बड़ा लाभ दे सकते हैं।

कर्क किसी पारिवारिक आनंदोत्सव में हिस्सा लेने का मौका मिलेगा। स्वादिष्ट भोजन का आनंद प्राप्त होगा। बौद्धिक कार्य सफल रहेंगे। लाभ के असवर हाथ आएंगे।

सिंह व्यवसाय ठीक चलेगा। मातहतों का सहयोग नहीं मिलेगा। कुसंगति से बचें, हानि होगी। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। आय में निश्चितता रहेगी। प्रमाद न करें।

कन्या आज के दिन शुभता का लाभ मिलेगा। मान-सम्मान मिलेगा। कीमती वस्तुएं संभालकर रखें। नौकरी में उच्चाधिकारी की प्रसन्नता रहेगी। प्रसन्नता रहेगी।

तुला किसी मांगलिक कार्य का आयोजन हो सकता है। व्यवसाय ठीक चलेगा। शत्रु शांत रहेंगे। प्रसन्नता रहेगी। दूर से अच्छी खबर प्राप्त हो सकती है। आत्मविश्वास बढ़ेगा।

वृश्चिक यात्रा मनोरंजक रहेगी। नौकरी में अनुकूलता रहेगी। लाभ में वृद्धि होगी। निवेश में जल्दबाजी न करें। पार्टनरों का सहयोग मिलेगा। जरूरी वस्तु गुम हो सकती है।

धनु आय में कमी रहेगी। व्यवसाय की गति धीमी रहेगी। जोखिम व जमानत के कार्य टालें। बेचैनी रहेगी। अप्रत्याशित खर्च सामने आएंगे। यात्रा में जल्दबाजी न करें।

मकर रुका हुआ धन मिल सकता है। व्यावसायिक यात्रा मनोनुकूल रहेगी। किसी अपने के व्यवहार से दु:ख होगा। विवेक का प्रयोग लाभ में वृद्धि करेगा। राजभय रहेगा।

कुम्भ नई आर्थिक नीति बनेगी। कार्यप्रणाली में सुधार होगा। पुरानी व्याधि से परेशानी हो सकती है। नौकरी में प्रभाव बढ़ेगा। व्यापार वृद्धि होगी। ऐश्वर्य पर व्यय होगा।

मीन लाभ के अवसर हाथ आएंगे। धर्म-कर्म में मन लगेगा। व्यापार मनोनुकूल चलेगा। नौकरी में सहकर्मी साथ देंगे। निवेश शुभ रहेगा। प्रभावशाली व्यक्तियों से परिचय होगा।

बॉलीवुड | मन की बात

राष्ट्रवादी का टैग लगने पर बोलीं यामी गौतम, कहा, लेबल तो बदलता रहता है

शांत और दृढ़ विश्वास वाले किरदारों को निभाने के लिए मशहूर अभिनेत्री यामी गौतम, अपनी अगली बड़ी रिलीज, हक के लिए तैयार हैं। इसमें उनके साथ इमरान हाशमी भी हैं। ऐतिहासिक शाहबानो मामले से प्रेरित यह फिल्म न्याय, पहचान और आस्था के विषयों पर आधारित है। फिल्म का ट्रेलर रिलीज हो चुका है। फिल्म के ट्रेलर लॉन्च के मौके पर यामी गौतम से पूछा गया कि हाल के वर्षों में उन्होंने जिस तरह की फिल्में चुनी हैं, उनके कारण उन्हें अक्सर राष्ट्रवादी कहा जाता है। इस पर उनका क्या कहना है? इस पर अभिनेत्री ने हंसकर इस लेबल को खारिज कर दिया। राष्ट्रवादी का टैग दिए जाने के बारे में पूछे जाने पर यामी ने कहा, लेबल है, मुझे पता भी नहीं है। अगर है तो लोगों का काम है कुछ न कुछ कहना। उन्होंने कहा, ये नहीं तो कुछ और लेबल, फिर कुछ और, फिर कुछ और। पहले कुछ और था। पहले कुछ अंडररेटेड लेबल था। उससे पहले कुछ और था। यह बदलता रहता है। मैं वो सब नहीं जानती हूं। यामी गौतम ने बताया कि फिल्म हक उनके लिए सिर्फ एक कोर्टरूम ड्रामा नहीं था। यामी ने कहा, यह विषय सार्वजनिक जीवन में रहा है। मैं हमेशा सोचती हूं कि शाजिया जैसी महिला को किस तरह की ताकत और साहस की जरूरत रही होगी। अगर मुझे ऐसी महिलाओं की कहानी कहने के मौके मिलते हैं, तो मैं जरूर कहूंगी। सुपर्ण वर्मा के निर्देशन में बनी फिल्म हक 7 नवंबर, 2025 को रिलीज होने वाली है। यह फिल्म कथित तौर पर शाह बानो मामले के दौरान उठे पर्सनल लॉ, लैंगिक समानता और न्याय से जुड़ी बहसों पर विचार करती है।

एक बार फिर साथ नजर आयेंगे सलमान खान और गोविंदा

ओ गोविंदा और सलमान खान के फैंस के लिए गुड़ न्यूज है। दरअसल खबर है कि दोनों सितारे लगभग दो दशकों के बाद फिर से पर्दे पर साथ में धमाल मचाने के लिए तैयार हैं। हफ्तों से चल रही अटकलों पर विराम लगाते हुए, इस प्रोजेक्ट से जुड़े एक सूत्र ने आखिरकार कंफर्म कर दिया है कि 'पार्टनर' जोड़ी फिर से साथ आ रही है।

बता दें कि बॉलीवुड हंगामा की एक रिपोर्ट के मुताबिक सूत्र के हवाले जानकारी मिली है, सलमान खान और गोविंदा एक प्रोजेक्ट के लिए साथ आ रहे हैं। फिल्म अभी शुरुआती दौर में है और अभी तक इसका टाइटल तय नहीं हुआ है। फिलहाल इसकी जानकारी सीक्रेट रखी जा रही है, लेकिन फैंस इस आइकॉनिक जोड़ी के एक शानदार रीयूनियन की उम्मीद ज़रूर कर सकते हैं। बिग बॉस में एक हिंट दिया था कि गोविंदा के साथ कुछ एक्साइटिंग काम हो सकता है। इसके बाद से इस जोड़ी के रीयूनियन की चर्चाएं तेज़ हो गई। हालांकि अभी तक कोई ऑफिशियल

अनाउंसमेंट नहीं की गई है, लेकिन सोशल मीडिया पर पहले से ही एक्साइटमेंट का माहौल है, फैंस को उम्मीद है कि लंबे समय से मचअवेटेड ये री यूनियन एक और हंसी से भरपूर एंटरटेनर लेकर आएगा।

गौतलब है कि सलमान खान और गोविंदा ने आखिरी बार डेविड धवन की 2007 की ब्लॉकबस्टर फिल्म पार्टनर में स्क्रीन स्पेस शेयर किया था। ये फिल्म बॉलीवुड की सबसे सफल कॉमेडी फिल्मों में से एक है। उनकी नेचुरल दोस्ती और बेहतरीन कॉमिक टाइमिंग ने इस जोड़ी को यादगार बना दिया। हाल ही में, गोविंदा ने फैंस को अपने कमबैक का हिंट दिया था। उन्होंने कहा कि वह एक नई पारी के लिए पूरी तरह तैयार हैं। गोविंदा ने इंस्टाग्राम पर फिल्म सिटी के एक सेट से अपनी एक तस्वीर भी शेयर की थी। अपनी बेहतरीन कॉमिक टाइमिंग और डांस मूव्स के लिए मशहूर गोविंदा इस तस्वीर में, चटख पीले रंग की जैकेट, जिस पर बारीक पैटर्न हैं, सफेद टी-शर्ट, नीली जींस और भूरे रंग के जूते पहने हुए मुस्कुराते हुए खड़े हुए दिखाई दे रहे हैं।

अभिनेता रवि मोहन को दिल्ली हाईकोर्ट से लगा बड़ा झटका

बॉलीवुड | गपशप

फिल्म इंडस्ट्री में एक बार फिर कॉपीराइट और ट्रेडमार्क विवाद ने जोर पकड़ लिया है। साउथ एक्टर और प्रोड्यूसर रवि मोहन को दिल्ली हाईकोर्ट से बड़ा झटका लगा है। अदालत ने उनकी आने वाली फिल्म ब्रो कोड के नाम के इस्तेमाल पर अंतरिम रोक लगा दी है। अदालत का कहना है कि यह नाम पहले से ही एक लोकप्रिय बेवरेज ब्रांड इंडोस्पिरिट के पास ट्रेडमार्क के तौर पर दर्ज है। कुछ हफ्ते पहले ही रवि मोहन को मद्रास हाईकोर्ट से इस टाइटल को लेकर राहत मिली थी, लेकिन अब दिल्ली हाईकोर्ट ने उनके खिलाफ फैसला सुनाया है। अदालत ने साफ कहा कि ब्रो कोड नाम पहले से ही एक प्रसिद्ध ड्रिंक ब्रांड के रूप में जाना

जाता है और फिल्म के प्रचार में इसका इस्तेमाल दर्शकों को भ्रमित कर सकता है। कोर्ट ने रवि मोहन स्टूडियोज को निर्देश दिया है कि वह इस नाम से अपनी फिल्म का प्रचार या रिलीज न करें जब तक मामला पूरी तरह से निपट नहीं जाता।

रवि मोहन की ओर से अदालत में दलील दी गई कि मद्रास हाईकोर्ट ने पहले इस मामले में 'ग्राउंडलेस थ्रेट्स' के आधार पर उन्हें राहत दी थी, लेकिन दिल्ली हाईकोर्ट ने इसे खारिज करते हुए कहा कि एक बार जब ट्रेडमार्क उल्लंघन का मुकदमा दायर हो जाता है, तो अदालत को अंतरिम आदेश जारी करने से रोका नहीं जा सकता।

फिलहाल अदालत ने 14 अक्टूबर 2025 को आदेश जारी करते हुए फिल्म स्टूडियो को निर्देश दिया है कि वो ब्रो कोड नाम का या तो बदलें या अस्थायी रूप से रोक दें। अगली सुनवाई 23 दिसंबर 2025 को तय की गई है।

अभिनेता रवि मोहन हाल ही में 'काधलिका नेरमिल्ले' नाम की रोमांटिक-कॉमेडी फिल्म में नजर आए थे। अब वो बतौर डायरेक्टर और प्रोड्यूसर एन ऑर्डिनरी मैन से डेब्यू कर रहे हैं, जिसमें योगी बाबू लीड रोल में होंगे। इसके अलावा वो ब्रो कोड फिल्म में अर्जुन अशोकन, एस.जे. सूर्याह, उपेंद्र, श्रद्धा श्रीनाथ, गौरी प्रिया और मालविका मनोज के साथ नजर आने वाले हैं।

अजब-गजब | ये है दुनिया का अनोखा देश

इस देश में न ही अपना एयरपोर्ट है और न ही अपनी खुद की करेंसी, फिर भी है अमीर देश

चीन या अमेरिका जैसे देशों में आम आदमी की औसत आय भारत से कहीं ज्यादा है। इतना ही नहीं, कई ऐसे विकसित देश हैं, जो भारत से ज्यादा अमीर हैं। लेकिन क्या आप एक ऐसे अनोखे देश के बारे में जानते हैं, जिसके पास न तो कोई एयरपोर्ट है और ना ही खुद की कोई करेंसी। इसके बावजूद उस देश के सभी लोग अमीर हैं।

अगर आपसे पूछा जाए कि दुनिया के सबसे अमीर देश कौन से हैं, तो आपका जवाब आर्थिक रुप से अमेरिका, चीन, जर्मनी, जापान और भारत हो सकते हैं। लेकिन पर कैपिटा जीडीपी के हिसाब से लग्जमबर्ग, आयरलैंड, स्विट्जरलैंड, नॉर्वे जैसे देश इस लिस्ट में टॉप पर हैं। लेकिन आज हम आपको एक ऐसे अनोखे और छोटे देश के बारे में बताने जा रहे हैं, जिसके पास न तो खुद का एयरपोर्ट है और ना ही अपनी करेंसी। इसके बावजूद वो सबसे अमीर देशों में से एक है

अब आप सोच रहे होंगे कि आखिर उस देश का नाम क्या है? ऐसे में बता दें कि इस देश का नाम है लिकटेंस्टाइन। क्षेत्रफल की

दृष्टि से लिकटेंस्टाइन दुनिया का छठा सबसे छोटा देश है, जो मात्र 160.5 वर्ग किलोमीटर तक फैला है। अगर गणना की जाए, तो यह देश नोएडा के क्षेत्रफल से भी छोटा है। गूगल पर उपलब्ध डेटा के मुताबिक, नोएडा का कुल क्षेत्रफल 203 वर्ग किलोमीटर है।

आपको जानकर हैरानी होगी, लेकिन बता दें कि लिकटेंस्टीन की अपनी कोई मुद्रा या हवाई अड्डा नहीं है, फिर भी यह दुनिया के सबसे अमीर देशों में से एक है। हवाई यात्रा के लिए लिकटेंस्टीन ऑस्ट्रिया और स्विट्जरलैंड के हवाई अड्डों का उपयोग करता है। सबसे छोटे देशों में से एक लिकटेंस्टीन की आबादी लगभग 40,000 है। इस देश की अपनी करेंसी भी नहीं है। यह स्विट्जरलैंड की मुद्रा स्विस फ्रैंक का उपयोग करता है। मानव विकास सूचकांक में लिकटेंस्टीन 17वें स्थान पर है।

प्रति व्यक्ति सकल घरेलू उत्पाद (जीडीपी) के मामले में लिकटेंस्टीन दुनिया में पहले स्थान पर है। अमेरिका इस सूची में आठवें और भारत 147वें स्थान पर है। इसका मतलब है कि दुनिया के सबसे छोटे देशों में से एक होने के बावजूद लिकटेंस्टीन सबसे अमीर देशों में से एक है। क्या आपको लिकटेंस्टीन के बारे में यह जानकारी थी?

ये है दुनिया का सबसे बड़ा मुर्गा! किंग ऑफ पॉल्ट्री के नाम से मशहूर है यह नस्ल

सोशल मीडिया पर वायरल वो वीडियो, जहां एक मुर्गा डॉग से भी बड़ा नजर आया 4 फीट लंबा, 30 किलो वजनी, काटने पर इतना मांस कि एक से ही कई लोगों का पेट भर जाए। हकीकत में ये ब्रह्मा चिकन है, दुनिया की सबसे बड़ी मुर्गी नस्लों में से एक, जिसका साइज तो कमाल का है लेकिन दावे अतिशयोक्ति भरे हैं। 1850 में अमेरिका से लाई गई ये नस्ल 'किंग ऑफ पॉल्ट्री' के नाम से मशहूर है। मुर्गे 30 इंच (76 सेमी) ऊंचे, 12-18 पाउंड (5.4-8.2 किलो) वजनी होते हैं जबकि मुर्गी 9.5-10 पाउंड (4.3-4.5 किलो) तक के होते हैं। सोशल मीडिया पर दावा किया गया कि इस मुर्गे से 30 किलो मांस निकल सकता है। लेकिन ये नामुमकिन है। गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड्स में सबसे भारी मुर्गा 1973 का वेइडों था, जो 22 पाउंड (10 किलो) का था। ये ब्रह्मा नहीं, बल्कि व्हाइट लेगहॉर्न था। लेकिन ब्रह्मा का रिकॉर्ड 17-18 पाउंड तक पहुंच चुका है। ब्रह्मा की कहानी 19वीं सदी की है। 1840 में ब्रिटेन से अमेरिका भेजे गए बड़े एशियाई मुर्गों ग्रे जंगल फाउल (चाइनीज शांगहाई) और मलय चिकन को लोकल चट्टाग्राहम चिकन के साथ क्रॉस किया गया। इसे 1852 में पहली बार न्यूयॉर्क पोल्ट्री शो में दिखाया गया, जहां इनकी ऊंचाई और वजन ने सबको हैरान कर दिया। नाम 'ब्रह्मा' ब्रह्मपुत्र घाटी से आया, जहां से मूल एशियाई स्टॉक था। APA (अमेरिकन पोल्ट्री एसोसिएशन) ने 1874 में इसे मान्यता दी। इस मुर्गी की तीन वैरायटीज हैं। लाइट (सफेद पंख, काली पूंछ), डार्क (काले-सफेद पैटर्न) और बफ (सुनहरा-भूरा)। इसके पैर पीले, बिना पंख के होते हैं जो ठंड सहने में मदद करते हैं। कंघा मटर जैसा छोटा होता है और आंखें पीली-भूरी होती हैं। ये स्वभाव में शांत होते हैं। लेकिन मुर्गे आक्रामक हो सकते हैं। साइज ही ब्रह्मा का स्क्रहै। इसकी ऊंचाई 26-30 इंच (मुर्गी 26, मुर्गा 30) होती है जो सामान्य ब्रॉयलर (18-20 इंच) से दोगुनी है। मुर्गे का वजन 12-18 lbs, मुर्गी 9.5-10 lbs होता है जो इसे मीट के लिए आइडियल बनाता है। एक मुर्गे से 3-4 किलो क्लीन मांस मिलता है जो 4-5 लोगों के लिए काफी है।

किसानों के साथ अपराधियों जैसा व्यवहार कर रही सैनी सरकार

हरियाणा में खाद संकट पर कांग्रेस और इनेलो ने भाजपा को घेरा

» किसानों के हाथों पर लगाई जा रही हैं मुहरें

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

चंडीगढ़। हरियाणा में विपक्षी दलों ने भाजपा सरकार पर उर्वरक की कमी से जूझ रहे किसानों के साथ अपराधियों जैसा व्यवहार करने का आरोप लगाया है, जहां उनके हाथों पर मुहरें लगाई जा रही हैं। कांग्रेस और इनेलो ने इस शर्मनाक प्रथा पर सवाल उठाते हुए एमएसपी सुनिश्चित करने और कानून-व्यवस्था बनाए रखने में सरकार की विफलता पर भी प्रकाश डाला। हरियाणा में विपक्षी दल कांग्रेस और इंडियन नेशनल लोकदल (इनेलो) ने राज्य में किसान उर्वरकों की कमी से जूझ रहे हैं और उनके साथ अपराधियों जैसा व्यवहार किया जा रहा है, क्योंकि जब वे उर्वरक लेने पहुंच रहे हैं, तो अधिकारी उनके हाथों पर मुहर लगा रहे हैं।

हरियाणा में सत्तारूढ़ भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) पर निशाना साधते हुए कांग्रेस महासचिव और राज्यसभा सदस्य रणदीप सिंह सुरजेवाला तथा इनेलो अध्यक्ष अभय सिंह चौटाला ने आरोप लगाया कि किसानों के साथ ऐसा व्यवहार कर उन्होंने जले पर नमक छिड़कने का काम किया है। इससे पहले हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री और विपक्ष के नेता भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने आरोप लगाया था कि हरियाणा की भाजपा सरकार सभी क्षेत्रों में जनता की उम्मीदों पर खरी नहीं उतरी है। करनाल शहर में एक सामाजिक कार्यक्रम में शामिल होने के दौरान पत्रकारों से बातचीत करते हुए हुड्डा ने कहा, किसान अपनी फसलों के उचित मूल्य के लिए संघर्ष कर रहे हैं और आम जनता सुरक्षा के मुद्दों का सामना कर रही है।उन्होंने कहा कि 24 फसलों के लिए एमएसपी देने का दावा करने वाली भाजपा सरकार अब अपना चेहरा छिपा रही है। उन्होंने कहा, हरियाणा में धान, बाजरा, कपास और मूंग सहित खरीफ की फसलें एमएसपी से 300 से 1,200 रुपये तक कम दामों पर बिक रही हैं। उन्होंने कहा, हम सरकार से बार-बार पूछ रहे हैं कि हरियाणा में किन 24 फसलों को एमएसपी मिल रहा है? खेतों से मंडियों तक पहुंचने वाली फसलों को एमएसपी नहीं मिल रहा है। कोई भी मंडी जाकर सच्चाई देख सकता है।

मप्र में आदिवासी किसानों की मेहनत का हो रहा शोषण: सिंघार

मध्यप्रदेश विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार ने मुख्यमंत्री को पत्र लिखकर राज्य में मक्का और मूंगफली की खरीदी समर्थन मूल्य पर करने की मांग की है। उन्होंने कहा कि इन फसलों की खेती मुख्य रूप से आदिवासी अंचलों में की जाती है, जहां किसान सीमित संसाधनों और कठिन परिस्थितियों में मेहनत से खेती करते हैं। सिंघार ने कहा कि वर्तमान में मक्का का समर्थन मूल्य 2400 रुपये प्रति क्विंटल है, जबकि मंडियों में किसानों को केवल करीब 1100 रुपये प्रति क्विंटल का भाव मिल रहा है। उन्होंने इसे किसानों के साथ हो रहा आर्थिक अन्याय बताया और कहा कि यह स्थिति आदिवासी किसानों की मेहनत का शोषण है। नेता प्रतिपक्ष ने मुख्यमंत्री से आग्रह किया कि जैसे राज्य सरकार गेहूं और धान की खरीदी समर्थन मूल्य पर करती है, वैसे ही मक्का और मूंगफली की खरीदी भी सरकारी स्तर पर शुरू की जाए, ताकि किसानों को उनकी उपज का उचित मूल्य मिल सके और उन्हें राहत मिले।

मुआवजा प्राप्त करने में किसान उलझन में पड़े : भूपेन्द्र

पूर्व मुख्यमंत्री भूपेन्द्र सिंह हुड्डा ने कहा कि सरकार ने फसल बेचने से लेकर मुआवजा प्राप्त करने तक की प्रक्रियाओं को इतना जटिल बना दिया है कि किसान उलझन में पड़ गए हैं। उन्होंने कहा, किसानों को न तो उचित दाम मिलता है और न ही मुआवज़ा। लेकिन, पिछले सालों की तरह, रबी की फसल की बुवाई के लिए खाद के लिए मारामारी मची हुई है। कई जगहों पर किसानों और महिलाओं पर लाठीचार्ज की भी खबरें आ रही हैं।

किसानों के हाथों पर मुहर लगाना अनुचित : सुरजेवाला

सुरजेवाला ने एक बयान में कहा, उर्वरक की गंभीर कमी के कारण पहले से ही संघर्ष कर रहे किसानों की मदद करने के बजाय, भाजपा सरकार ने अब एक शर्मनाक प्रथा शुरू कर दी है - किसानों के हाथों पर इस तरह मुहर लगाना, जैसे कि वे अपराधी हों। वहीं, चौटाला ने एक अन्य बयान में दावा किया कि एक आधार कार्ड के बदले केवल दो बोरी डीएपी खाद दी जा रही है। उन्होंने कहा कि किसानों के हाथों पर मुहर लगाई जा रही है, जिससे उन्हें अपराधी जैसा महसूस हो रहा है।

वनडे में सर्वश्रेष्ठ रेटिंग के साथ मंधाना शीर्ष पर

» एक्लेस्टोन का गेंदबाजी रैंकिंग में दबदबा कायम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। भारत की अनुभवी सलामी बल्लेबाज स्मृति मंधाना ने घरेलू विश्वकप में शानदार प्रदर्शन के दम पर करियर की सर्वश्रेष्ठ रेटिंग हासिल करने के साथ महिला वनडे क्रिकेट में शीर्ष बल्लेबाज के रूप में अपनी स्थिति मजबूत कर ली। बाएं हाथ की बल्लेबाज ने पिछले दो मैचों में न्यूजीलैंड के खिलाफ 109 और बांग्लादेश के खिलाफ नाबाद 34 रन बनाए हैं। इन पारियों के बाद उनके नाम 828 रेटिंग अंक हो गए, जो दूसरे स्थान पर मौजूद ऑस्ट्रेलिया की एश्ले गार्डनर (731) से 97 अंक अधिक हैं। गार्डनर ने इंग्लैंड के खिलाफ अपने नाबाद शतक के बाद छह स्थानों की छलांग लगाई।

मंधाना को इससे पहले सितंबर 2025 के लिए आईसीसी-महीने का सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुना गया था। दक्षिण अफ्रीका की कप्तान लाउरा वोल्वार्ड्ट भी 90 और 31 रनों की पारी की बदौलत दो स्थानों के सुधार के साथ शीर्ष तीन में पहुंच गईं। इंग्लैंड की एमी जोन्स चार पायदान चढ़कर नौवें (656) स्थान पर पहुंच गई, चोट के कारण विश्व कप से बाहर हुई प्रतिका रावल 564 की रेटिंग के साथ शीर्ष 30 (27वें स्थान) में पहुंच गई। इस विश्व कप में स्पिन की अहम भूमिका रही है और कई गेंदबाजों ने शानदार प्रदर्शन के बूते अपनी रैंकिंग में सुधार किया है। इंग्लैंड की सोफी एक्लेस्टोन महिला वनडे गेंदबाजी रैंकिंग (747) में शीर्ष पर बनी हुई हैं। एक्लेस्टोन को ऑस्ट्रेलिया की लेग स्पिनर अलाना किंग से कड़ी टक्कर मिल रही है। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ सात विकेट लिए थे। किंग ने अपने करियर की सर्वोच्च रेटिंग 698 के साथ पांच स्थान की छलांग लगाई, जिससे उनकी टीम की साथी गार्डनर एक स्थान फिसलकर तीसरे (689) स्थान पर आ गईं।

रणजी में 8 विकेट लेकर शमी ने ठोका वापसी का दावा

नई दिल्ली। अनुभवी गेंदबाज मोहम्मद शमी ने कहा कि वह फिट हैं और भारतीय टीम में वापसी के लिए तैयार हैं। बंगाल के लिए रणजी ट्रॉफी में खेल रहे तेज गेंदबाज ने गुजरात के खिलाफ आठ विकेट लेकर अपनी टीम को 141 रनों से बड़ी जीत दिलाई। शमी ने कहा, मेरा काम है प्रदर्शन करना बाकी चयन समिति के हाथों में फैसला है। दूसरी पारी में पांच विकेट लेने के बाद शमी ने कहा कि बहुत मेहनत करनी पड़ती है लेकिन मेरा मानना है कि भाग्य भी अहम भूमिका निभाता है। उन्होंने कहा, हर कोई भारत के लिए खेलना चाहता है। मैं भी यही चाहता हूं और इसके लिए तैयार हूं। शमी लंबे समय से टीम से बाहर हैं और उन्हें ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ सीमित ओवरों की सीरीज के लिए टीम में नहीं चुना गया था। इसे लेकर नाराजगी जताई थी और मुख्य चयनकर्ता अजीत अगरकर के बयान पर पलटवार भी किया था। शमी करीब आठ महीने से भारतीय टीम से बाहर चल रहे हैं। वह चैंपियंस ट्रॉफी जीतने वाली भारतीय टीम का हिस्सा थे। गुजरात के खिलाफ बंगाल की जीत के बाद 35 वर्षीय गेंदबाज ने कहा, मेरी प्रेरणा फिट रहना और भारतीय टीम के लिए हर समय उपलब्ध रहना है। मैं मैदान पर अच्छा प्रदर्शन करता रहूंगा और बाकी सब चयनकर्ताओं के हाथ में है।

एसआईआर से बिगड़ेगा राजनीतिक संतुलन

» अभिषेक बनर्जी ने भाजपा और निर्वाचन आयोग पर निशाना साधा, बड़े आंदोलन की दी चेतावनी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कोलकाता। टीएमसी के वरिष्ठ नेता अभिषेक बनर्जी ने पश्चिम बंगाल में एसआईआर की घोषणा को लेकर भाजपा और निर्वाचन आयोग पर हमला बोलते हुए कहा, यह कवायद वास्तविक मतदाताओं को 'बाहर' करने और 2026 के राज्य विधानसभा चुनावों से पहले राजनीतिक संतुलन को बिगाड़ने के लिए की गई है। उन्होंने आरोप लगाया कि निर्वाचन आयोग 2002 में दो साल तक चले एक 'व्यापक कार्य' को हड़बड़ी में पूरा कर रहा है, जिसका उद्देश्य राज्य प्रशासन को अपने नियंत्रण में लाना है, ताकि निर्वाचित सरकार काम न कर सके। तृणमूल के राष्ट्रीय महासचिव ने कहा, 'भाजपा के सहयोगी संगठन, निर्वाचन आयोग ने कल एसआईआर की घोषणा की है। यह प्रक्रिया (नाम) शामिल करने की नहीं, बल्कि बाहर करने के बारे में है।' उन्होंने कहा कि केंद्र में सत्तारूढ़ पार्टी यह तय करने का प्रयास कर रही है कि 'कौन वोट देगा और कौन नहीं।' मुख्य निर्वाचन आयुक्त से सरकार बदलने पर 'देश छोड़कर नहीं भागने' की अपील करते हुए बनर्जी ने कहा, 'आप जहां भी जाएंगे, मैं आपको ढूंढकर वापस लाऊंगा। आपको जनता को जवाब देना होगा।' उन्होंने कहा कि एसआईआर का मतलब 'साइलेंट इनविजिबल रिगिंग' है और तर्क दिया कि यह प्रक्रिया असली मतदाताओं को शामिल करने के लिए नहीं, बल्कि 'राजनीतिक निर्देश पर उन्हें बाहर करने' की साजिश है। तृणमूल नेता ने सवाल उठाया कि जब वह पांच पूर्वोत्तर राज्य बांग्लादेश और म्यांमा के साथ सीमा साझा करते हैं, तो बंगाल को ही क्यों निशाना बनाया गया।

मतदाता सूची में विसंगतियां हैं, तो लोकसभा भंग कर नये सिरे से चुनाव कराए जाने चाहिए

मतदाता सूची के पुनरीक्षण के समय पर कटाक्ष करते हुए बनर्जी ने यहां एक ं कहा, ''केवल डेढ़ साल पहले ही लोकसभा चुनाव हुए थे। अगर अब मतदाता सूची में विसंगतियां हैं, तो लोकसभा भंग कर नये सिरे से चुनाव कराए जाने चाहिए।'' उन्होंने पूछा, ''बांग्लादेशियों और रोहिंग्याओं की मौजूदगी का हवाला देकर बंगाल के लिए एसआईआर की घोषणा क्यों की गई? अन्य सीमावर्ती राज्यों का क्या हुआ?''

दिल्ली नगर निगम के उपचुनाव में रेखा सरकार की होगी परीक्षा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली राज्य चुनाव आयोग ने घोषणा की कि एमसीडी के 12 वार्डों के लिए उपचुनाव 30 नवंबर को होंगे। आधिकारिक प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि मतगणना 3 दिसंबर को होगी। आयोग के अनुसार, नामांकन 3 नवंबर से शुरू होंगे और मतदान 30 नवंबर को सुबह 7:30 बजे से शाम 5:30 बजे तक बिना किसी रुकावट के होगा।

बता दें शालीमार बाग-बी वार्ड का प्रतिनिधित्व पहले रेखा गुप्ता करती थीं, जबकि द्वारका-बी वार्ड भाजपा पार्षद कमलजीत सहरावत के पश्चिमी दिल्ली से लोस के लिए चुने जाने के बाद खाली हुआ था। बाकी वार्ड भाजपा और आप के मौजूदा पार्षदों के फरवरी में हुए दिल्ली विस चुनाव लड़ने और विधायक बनने के बाद खाली हुए थे।

स्कूल यूनिफॉर्म की राशि में कटौती कर रही भाजपा: जूली

» राजस्थान सरकार पर भड़के नेता प्रतिपक्ष

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर। राजस्थान विधान सभा में प्रतिपक्ष के नेता टीकाराम जूली ने भाजपा सरकार को चुनाव से पूर्व संकल्प पत्र के माध्यम से जनता से किया वादा याद दिलाते हुए स्कूली छात्रों की यूनिफार्म के लिए दी जाने वाली सहायता राशि में कटौती किये जाने की आलोचना की है। उन्होंने कहा कि सरकार न तो बच्चों को सुरक्षित स्कूली इमारतें दे पा रही है और न ही आवश्यकतानुसार शिक्षक ही उपलब्ध करवा पा रही है। इसके बाद अब नन्हें-मुन्ने स्कूली बच्चों को दी जा रही स्कूली ड्रेस में भी सरकार भेदभाव कर रही है।

जूली ने सरकार द्वारा जारी आदेश का हवाला देते हुए बताया कि कांग्रेस द्वारा बच्चों के अभिभावकों को राहत पहुंचाने के लिए स्कूली छात्रों को 2 जोड़ी स्कूल ड्रेस का कपड़ा और 200 रुपये सिलाई के लिए दिए जा रहे थे। तब भारतीय जनता पार्टी द्वारा कांग्रेस सरकार की इस योजना की आलोचना करते हुए यह कहा गया कि 200 रुपये में स्कूल ड्रेस की सिलाई कैसे होगी।

बिहार में 'जननायक' पर जुबानी जंग जारी

» सभी दल अपने-अपने बड़े नेताओं का कर रहे हैं महिमामंडन

» आरजेडी और जदयू के पोस्टरों से सियासी जंग

» भाजपा राजद पर बोला करारा हमला

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। बिहार में चुनावी प्रचार में तेजी आ गई है। सभी दल अपने-अपने बड़े नेताओं को जननायक बताने में जुटें हैं वहीं पटना में आरजेडी और जदयू के पोस्टरों से सियासी जंग छिड़ गई है। 'सुशासन' की बात करने वाली जदयू अब नीतीश कुमार को जनसेवक के रूप में पेश कर रही है। वहीं, आरजेडी ने तेजस्वी को बिहार का नायक (जननायक) बताया है।

तेजस्वी को 'जननायक' बताने पर एनडीए ने आपत्ति जताई है। इधर, केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह, राहुल गांधी और राजनाथ सिंह बिहार के अलग-अलग इलाकों में अपने प्रत्याशियों के समर्थन में चुनावी रैली और जनसभाएं करेंगे। शाह एनडीए उम्मीदवारों के पक्ष में दरभंगा, समस्तीपुर और बेगूसराय जाएंगे। जबकि राहुल गांधी मुजफ्फरपुर और दरभंगा में दो कार्यक्रमों में राजद के तेजस्वी यादव के साथ शामिल होंगे। राजनाथ सिंह और उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ बुधवार को दरभंगा, बेगूसराय, समस्तीपुर, सारण, सीवान, पटना, भोजपुर और बक्सर में जनसभाएं करेंगे।

तेजस्वी को जननायक बनने में वक्त लगेगा : सिद्दीकी

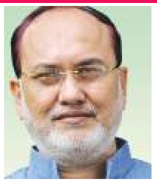

राजद के नेता अब्दुल बारी सिद्दीकी ने कहा- अभी तेजस्वी को जननायक बनने में वक्त लगेगा। वे लालू प्रसाद की विरासत हैं। उनकी राह पर चलने की कोशिश कर रहे हैं। इससे पहले निर्दलीय सांसद पप्पू यादव ने राहुल गांधी को 'जननायक' कहा था। जिस पर विवाद भी हुआ। तब प्रधानमंत्री मोदी ने भी कहा था कि कुछ लोग जनता द्वारा कर्पूरी ठाकुर को दी गई 'जननायक' की उपाधि को चुराने की कोशिश कर रहे हैं।

तेजस्वी को लेकर सवाल क्यों पूछते हैं : तेजप्रताप

तेजप्रताप यादव से जब तेजस्वी यादव के मेनिफेस्टो के बारे में पूछा गया तो उन्होंने पत्रकारों से ही सवाल पूछ दिया। तेजप्रताप ने कहा कि, हमसे तेजस्वी यादव के बारे में क्यों सवाल पूछते हैं।

बिहार का असली जननायक गांव-गरीब, किसान और झुग्गी झोपड़ी में रहने वाला आम आदमी है : मुख्तार अब्बास नकवी

बीजेपी के वरिष्ठ नेता मुख्तार अब्बास नकवी ने बिहार विधानसभा चुनाव के मद्देनजर महागठबंधन पर तंज कसते हुए कहा कि उनका झालर शॉर्ट सर्किट के झटके में फंस चुका है। इसीलिए, अब कुछ नहीं होने वाला है। बिहार की जनता सबक सिखाने के लिए तैयार है। आईएएनएस से बातचीत में उन्होंने कहा कि महागठबंधन में फाइट चल रही है। दूसरी ओर एक बार फिर से ये लोग बिहार के मुसलमानों को वोटों का पंचिंग बैग बनाने की कोशिश करने वाले हैं। विकास के नाम पर वोट मांगने वाले विकास नहीं करते हैं। अब मुसलमानों को आगे बढ़कर इन्हें झटका देना चाहिए। उन्होंने जननायक विवाद पर कहा कि बिहार का असली जननायक गांव-गरीब, किसान और झुग्गी-झोपड़ी में रहने वाला आम आदमी है। बिहार का असली जननायक वह व्यक्ति है, जो ऐतिहासिक हकीकत से जुड़ा है और पूरे देश में विश्वास की अलग लहर जगाई है। राहुल गांधी फर्जी जननायक बनकर फर्जी वादों में लगे रहेंगे तो फायदा नहीं होगा। सामंती सुल्तान से जननायक बनने के लिए कई जन्म लेने पड़ेंगे। वक्फ कानून पर राजद नेताओं के बयान पर उन्होंने कहा कि यह आस्था के संरक्षण के लिए है। जिनकी दुकान चल रही थी, उनके पेट में दर्द हो रहा है। कानून फाड़ने के लिए नहीं, बल्कि मजबूती से जमीन पर उतारने के लिए होता है।

बावनकुले के विवादित बयान पर महाराष्ट्र में मचा घमासान

» बीजेपी नेता ने अजगर से की उद्धव ठाकरे की तुलना

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। महाराष्ट्र सरकार में मंत्री और बीजेपी के वरिष्ठ नेता चंद्रशेखर बावनकुले ने पूर्व सीएम उद्धव ठाकरे को लेकर विवादित बयान दिया है। उन्होंने ठाकरे की तुलना अजगर से करके नया विवाद पैदा कर दिया है। इसके अलावा उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह की तारीफ की।

चंद्रशेखर बावनकुले ने कहा, मुंबई को तो निगला है उद्धव ठाकरे जैसे अजगर ने. यह घर में बैठे है, रात में दिनभर सोता है और खाता है. इन्होंने पूरे मुंबई को खा डाला है. अमित भाई (अमित शाह) ने कश्मीर से कन्याकुमारी तक हमारे देश से आतंकवाद खत्म करने के लिए प्रयत्न किया, माओवाद खत्म करने के लिए जिस प्रकार से काम किया है।

उन्होंने आगे कहा, हमारे मोदी साहब 11 सालों में देश को कहां से कहां ले गए. आतंकवादियों को घर में घुसकर मारा है, उनको अगर एनाकोंडा कहेंगे तो, एनाकोंडा अजगर तो यह लोग हैं, इन्होंने 40 साल मुंबई खा डाली है. उद्धव ठाकरे तो ऐसे अजगर हैं, इन्होंने तो खुद की पार्टी भी नहीं रखी, वह भी खा ली. शिवसेना के हक को भी खा लिया। चंद्रशेखर बावनकुले के अलावा महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने भी मंगलवार को उद्धव ठाकरे पर हमला बोलते हुए उनकी तुलना एक ऐसे एनाकोंडा से की। उन्होंने कहा कि एनाकोंडा की भूख कभी खत्म नहीं होती और जो मुंबई के खजाने पर कुंडली मारकर बैठा हुआ है।

बावनकुले ने कहा, किसी को गलत बोलने से वोट नहीं मिलते. लीडरशिप को प्रूव करने की बात है। लीडरशिप चुनाव में प्रूव होती है. आने वाले चुनाव में मुंबई में ये घर जाने वाले हैं और 51 फीसदी की लड़ाई हम जितने वाले हैं. हमारे एलयांस जितने वाली है। इसीलिए इन्होंने अभी से गाली देकर साख बचाने की कोशिश की है।

भाजपा कार्यालय की जमीन आवंटन में अनियमितता : रोहित

राष्ट्रवादी कांग्रेस पार्टी-शरदचंद्र पवार (एनसीपी-एसपी) नेता रोहित पवार ने आरोप लगाया कि दक्षिण मुंबई में भारतीय जनता पार्टी की महाराष्ट्र इकाई के नए मुख्यालय के लिए भूमि हस्तांतरण सहित कई शर्तों का उल्लंघन किया गया है। पवार ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर एक पोस्ट में आरोप लगाया कि अधिकारियों ने कई अनियमितताओं को केवल इसलिए नजरअंदाज कर दिया क्योंकि जमीन का इस्तेमाल बीजपी कार्यालय के लिए किया जा रहा है। एनसीपी (एसपी) के महासचिव ने कहा कि उन्होंने पार्टी प्रतिनिधियों के साथ बृहन्मुंबई महानगरपालिका (बीएमसी) आयुक्त भूषण गगरानी से मुलाकात की और इस मामले पर विस्तृत चर्चा की। पवार ने कहा, हमने अपने सभी प्रश्नों और आपत्तियों को सूचीबद्ध करते हुए एक ज्ञापन सौंपा. आयुक्त ने हमें आश्वासन दिया है कि जल्द ही एक लिखित स्पष्टीकरण दिया जाएगा और हम उनके जवाब का इंतजार कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि इस मामले ने प्रशासन की पारदर्शिता पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं. उन्होंने भूमि आवंटन प्रक्रिया की गहन जांच की मांग की। एनसीपी (एसपी) नेता ने लिखा, यह मामला बहुमूल्य सार्वजनिक भूमि से जुड़ा है और नागरिकों को सच्चाई जानने का हक है।

उद्धव ठाकरे ने अमित शाह को एनाकोंडा बताया

बता दें कि शिवसेना (यूबीटी) प्रमुख ने केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह को एनाकोंडा कहा था, जो मुंबई को निगलना चाहता है, इसके बाद उनपर महायुति के नेता जमकर पलटवार कर रहे हैं।

मोंथा ने आंध्र व ओडिशा में मचाया कोहराम, एक की मौत

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। चक्रवाती तूफान 'मोंथा' के पश्चिम गोदावरी जिले के नरसापुर के पास आंध्र प्रदेश के तट से गुजरने के बाद बुधवार सुबह विजयवाड़ा शहर में तेज हवाएं चलीं और भारी बारिश हुई, कई पेड़ उखड़ गए जबकि कई सड़कें जलमग्न हो गईं। भारत मौसम विज्ञान विभाग (आईएमडी) ने यह जानकारी दी।

आईएमडी की ओर से बुधवार सुबह पांच बजे जारी बुलेटिन में कहा गया है कि तट पार करने के बाद चक्रवात पिछले छह घंटे के दौरान उत्तर-पश्चिमी दिशा में 10 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार से आगे बढ़ा और धीमा पड़ गया। एक के मरने की खबर है। ताजा अवलोकन से संकेत मिलता है कि भीषण चक्रवाती तूफान 'मोंथा' ने (28 अक्टूबर की रात 11:30 बजे से 29 अक्टूबर की रात 12:30 बजे के बीच) आंध्र प्रदेश के तटीय क्षेत्र को पार किया। तट से गुजरने की प्रक्रिया लगभग पांच घंटे तक चली, जो मंगलवार शाम करीब 7:30 बजे शुरू हुई और देर रात 12:30 बजे पूरी हुई। देर रात 2:30 बजे तक 'मोंथा' विशाखापत्तनम से 230 किलोमीटर दक्षिण पश्चिम में केंद्रित था। मौसम विभाग ने कहा, संभावना है कि यह उत्तर-पश्चिम दिशा में आंध्र प्रदेश के तट को पार करेगा और अगले छह घंटे के दौरान प्रचंड अवस्था में रहेगा, उसके बाद के छह घंटे के दौरान धीमा पड़कर गहन दाबक्षेत्र में तब्दील हो जाएगा।

भूपेश बघेल के बेटे चैतन्य को झटका

अदालत ने शराब घोटाले में जमानत याचिका खारिज की

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। रायपुर की विशेष प्रिवेंशन ऑफ मनी लॉन्ड्रिंग एक्ट (पीएमएल) अदालत ने छत्तीसगढ़ के बहुचर्चित शराब घोटाले में पूर्व मुख्यमंत्री भूपेश बघेल के बेटे चैतन्य बघेल की जमानत याचिका खारिज कर दी है। चैतन्य बघेल 18 जुलाई से न्यायिक हिरासत में हैं। प्रवर्तन निदेशालय ने उन्हें शराब कारोबार से जुड़ी अनियमितताओं और अवैध कमाई को सफेद धन में बदलने के आरोप में गिरफ्तार किया था।

ईडी का आरोप है कि चैतन्य बघेल ने शेल कंपनियों और रियल एस्टेट निवेशों के ज़रिए घोटाले की रकम को छिपाने की कोशिश की। एजेंसी के अनुसार, यह पूरा शराब घोटाला करीब 2,000 करोड़ रुपये का है, जिसमें राजनेता, नौकरशाह और निजी कंपनियां मिलीभगत कर राज्य के आबकारी सिस्टम में हेराफेरी कर रही थीं, ईडी की केस फाइल में डिजिटल साक्ष्य, वित्तीय लेनदेन के रिकॉर्ड और आबकारी विभाग से जुड़े कई लोगों के बयान शामिल हैं एजेंसी ने इस मामले में पहले ही विस्तृत आरोपपत्र अदालत में दाखिल कर दिया है। सुनवाई के दौरान चैतन्य बघेल की कानूनी टीम ने दलील दी कि उनके खिलाफ राजनीतिक प्रतिशोध के तहत कार्रवाई की जा रही है और कोई ठोस सबूत नहीं है जो उन्हें मनी ट्रेल से जोड़ता हो। हालांकि, कोर्ट ने कहा कि जांच अभी अहम चरण में है और जमानत देने से जांच प्रभावित हो सकती है। इस आधार पर अदालत ने जमानत याचिका खारिज कर दी । इस मामले ने छत्तीसगढ़ की राजनीति को भी गर्मा दिया है. सत्ता में काबिज भाजपा ने कांग्रेस पर बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार को बढ़ावा देने का आरोप लगाया है, जबकि कांग्रेस ने ईडी की कार्रवाई को राजनीतिक प्रतिशोध बताया है. फिलहाल चैतन्य बघेल न्यायिक हिरासत में रहेंगे, जबकि ईडी इस बहु-करोड़ शराब घोटाले की जांच आगे बढ़ा रही है, जिसे हाल के वर्षों में राज्य का सबसे बड़ा वित्तीय घोटाला माना जा रहा है।

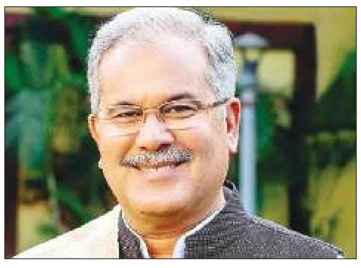

एक बार फिर महाराष्ट्र में किसानों ने उड़ाई भाजपा की नींद

कर्जमाफी और फसलों के उचित मूल्य की मांग पर आंदोलन तेज, नागपुर बॉर्डर पर रोका, सीएम के घर की सुरक्षा बढ़ाई गई

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। महाराष्ट्र में किसान कर्ज माफी की मांग को लेकर एक बार फिर आंदोलन कर रहे हैं किसान यलगार मार्च निकाल रहे हैं. प्रदर्शन के बीच नागपुर से हैदराबाद, नागपुर से जबलपुर और रायपुर जाने वाली सड़कें मंगलवार (28 अक्टूबर) की शाम 5.00 बजे से ही जाम कर दी गई हैं। सड़कों पर हजारों वाहन फंसे हैं।

महाराष्ट्र में किसान आंदोलन प्रहार जन शक्ति पार्टी के नेता और भूत पूर्व मंत्री व विधायक बच्चू कड़ू के नेतृव में हो रहा है. उनकी पार्टी भी सरकार के खिलाफ प्रदर्शन कर रही है। बच्चू कड़ू के नेतृत्व में किसानों का नागपुर तक यलगार मार्च निकाला जा रहा है।आंदोलनकारी किसान अमरावती से चलकर नागपुर तक पहुंचे हैं.

इस मार्च को पुलिस ने नागपुर के बॉर्डर पर रोका है और नागपुर में सीएम के घर की सुरक्षा बढ़ा दई गई है। किसानों की मांग है कि उनका कर्ज माफ किया जाए, फसलों के नुकसान की भरपाई हो और फसलों की कीमत एमएसपी से 20 प्रतिशत बढ़ाकर दी जाए।

मांगें पूरी होने तक नहीं छोड़ेंगे नागपुर : बच्चू कड़ू

भूत पूर्व मंत्री व विधायक बच्चू कड़ू ने आंदोलन से पहले कहा था कि उन्हें मुख्यमंत्री कार्यालय से मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस, राजस्व मंत्री और 38 विभागों के सचिवों के साथ बैठक के लिए निमंत्रण मिला है। कड़ू ने कहा था कि वह अपने समर्थकों के साथ चर्चा के बाद बैठक में भाग लेने के बारे में निर्णय लेंगे। उन्होंने चेतावनी दी कि केवल बातचीत के वादे पर आंदोलन समाप्त नहीं किया जाएगा। उन्होंने घोषणा की कि जब तक सरकार किसानों को पूर्ण ऋण माफी प्रदान करने के लिए ठोस निर्णय नहीं लेती, तब तक प्रदर्शनकारी नागपुर नहीं छोड़ेंगे।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक **संजय शर्मा** द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। **महाराष्ट्र कार्यालय**:- 2 जी, कृष्णा कुटीर सागरिका CHS जुहू तारा रोड जुहू- मुंबई- 400049। **संपादक** - संजय शर्मा, **विधि सलाहकार**: सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, **वित्तीय सलाहकार**: संदीप बंसल, **कार्टूनिस्ट**: हसन जैदी, **दूरभाष**: 0522- 4078371 | **Email**: daily4pm@gmail.com |
website: www.4pm.co.in | **RNI-UPHIN/2015/62233** डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।